सम्पादक
डॉ० हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु० गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं० 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं० 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अगस्त, 2015 वर्ष 14 अंक 06

सबसे बड़ा है सबसे बड़ा है

सब से बड़ा है सब से बड़ा है
अल्लाह तआला सबसे बड़ा है
उसी को कहते हम ईशवर हैं
ईशवर जग का सबसे बड़ा है
उसी ने निर्मित किया है जग को
जग निर्माता सबसे बड़ा है
वही हमारा पूज्य है केवल
पूज्य हमारा सबसे बड़ा है
दूत हैं उसके नबी मुहम्मद
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
कहना मानें उन का सब जन
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
स्वतंत्रता तथा दासता	डॉ० हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जगनायक	हज़रत मौ० सै० मु० राबे हसनी नदवी	7
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ० अली मियाँ नदवी रह०	14
इन्सानी जीवन	मौ० सै० अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०	16
स्वतंत्रता के बाद	मौ० सै० अबुल हसन अली नदवी रह०	18
इस्लाम में महिलाओं के अधिकार	शीबा खान	23
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद	इदारा	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	28
हज के नये मुसाफ़िरों से	इदारा	30
आख़िर नबी मुहम्मद सल्ल० (पद्य)	इदारा	35
समन्द्रों की दुन्या	जावेद इक़बाल	36
उर्दू सीखिये	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़रः

अनुवाद- अल्लाह सूद को मिटाता है और खैरात को बढ़ाता है[1], और अल्लाह किसी नाशुक्रे गुनहगार से खुश नहीं[2][276], जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये और नमाज़ को काइम रखा और ज़कात देते रहे उनके लिए उनका अपने रब के पास सवाब है, और न उनको खौफ है और न वह गमगीन होंगे[3][277] ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और छोड़ दो जो कुछ बाक़ी रह गया है सूद अगर तुम को अल्लाह के फरमाने का यकीन है[4][278], फिर अगर नहीं छोड़ते तो तैयार हो जाओ अल्लाह से और उसके रसूल से लड़ने को, और अगर तौबा करते हो तो तुम्हारे वास्ते तुम्हारा अस्ल माल है न तुम किसी पर जुल्म करो और न कोई तुम पर जुल्म करे[5][279] और अगर तंग दस्त है तो मोहलत देनी चाहिए कुशादगी होने तक, और बख्श दो तो तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है अगर तुमको समझ हो[6][280]।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. अल्लाह सूद के माल को मिटाता है यानी उसमें बरकत नहीं होती बल्कि अस्ल माल भी खत्म हो जाता है चुनांचे हदीस शरीफ में इरशाद है कि सूद का माल कितना ही बढ़ जाये अंजाम उसका इफ्लास यानी गुर्बत व मुफलिसी है और खैरात के माल को बढ़ाने से यह मतलब है कि उस माल में ज़ियादती होती है अल्लाह बरकत देता है और उसका सवाब बढ़ाया जाता है।

2. मतलब यह कि सूद लेने वाले ने मालदार हो कर इतना भी न किया कि मोहताज को कर्ज ही बिना सूद दे देता चाहिए तो यह था कि जरूरतमंद को खैरात देता तो इससे ज़ियादा अल्लाह की नेमत की ना शुक्री क्या होगी।

3. इस आयत में सूद लेने वाले के मुक़ाबले में ईमान वालों के अवसाफ व खूबियों और उनका इनाम जिक्र कर दिया जो सूद खाने वाले के अवसाफ व हालात और उसके हुक्म के खिलाफ है जिससे सूद खाने वाले की पूरी तंबीह व तश्नीअ़ भी जाहिर हो गयी।

4. यानी मुमानियत से पहले जो सूद ले चुके सो ले चुके लेकिन मुमानियत के बाद जो चढ़ा उसको हरगिज़ न मांगो।

5. यानी पहले सूद जो तुम ले चुके हो उसको अगर तुम्हारे अस्ल माल में महसूब करें और उसमें से काट लें तो तुम पर जुल्म है और मुमानियत के बाद का सूद चढ़ा हुआ अगर तुम मांगो तो यह तुम्हारा जुल्म है।

6. यानी जब सूद की मुमानियत आ गयी और उसका लेना देना वर्जित हो गया तो अब तुम गरीब सूद लेने वाले से तक़ाजा करने लगो यह हरगिज़ न चाहिए बल्कि गरीब को मोहलत दो और तौफ़ीक़ हो तो बख्श दो।

—प्रस्तुति—
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

गुलाम आज़ाद करने की फज़ीलत-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने किसी मुसलमान गुलाम को आज़ाद कर दिया तो अल्लाह तआला उस आज़ाद किये हुए के हर अंग के बदले आज़ाद करने वाले के हर अंग को आग से आज़ाद कर देगा। यहां तक कि उसकी शरम गाह को शर्मगाह के बदले।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह कौन से काम अफज़ल हैं फरमाया अल्लाह पर ईमान, उसके रास्ते में जिहाद, मैंने अर्ज किया कौन सी गर्दन का आजाद करना अफज़ल है फरमाया जो अपने मालिक के नजदीक कीमती हो।

(बुखारी—मुस्लिम)

गुलाम के साथ बराबरी-

हज़रत मअ़रूर बिन सुवैद से रिवायत है कि मैंने अबू ज़र रज़ि0 को देखा जिस प्रकार का लिबास आप पहने हुए हैं वैसा ही उनका गुलाम पहने है, मैंने उसकी वजह पूछी तो उन्होंने कहा मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक शख्स को गालियां दीं यानी माँ की गाली— रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ अबू ज़र रज़ि0 तुमने उसकी माँ को ऐब लगाया— तुममें अभी जाहिलीयत की बू बाकी है यह तुम्हारे खिदमतगार यह भी तुम्हारे भाई हैं, अल्लाह तआला ने उनको तुम्हारे मातहत कर दिया है— जब तुम्हारे भाई तुम्हारे मोहताज हो जायें तो तुम को चाहिए कि जो तुम खाओ वही खिलाओ और जो पहनो वही पहनाओ उनको ऐसे काम की तकलीफ न दो जो उनकी ताकत से बाहर हो अगर तुम उन पर ऐसा बोझ रखो तो उनकी मदद भी करो।

(बुखारी—मुस्लिम)

बावर्ची का ख्याल-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तुम्हारा खादिम खाना ले कर आये तो तुम उस को भी अपने साथ बिठा लो, और अगर अपने साथ न बिठाओ तो फिर एक या दो लुक्मे दे दो, इसलिए कि उसने पकाने में थकान और आग की गर्मी सही है। (बुखारी)

उस गुलाम की फज़ीलत जो अल्लाह का और अपने मालिक का हक अदा करे-

दोहरा अज्रः- हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया

जो गुलाम अपने आक़ा की खैर ख्वाही करे और अल्लाह की इबादत भी अच्छी तरह करे तो उसको दूना अज्र मिलेगा। (बुखारी–मुस्लिम)

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया खैरख्वाही करने वाले गुलाम को दोहरा अज्र मिलेगा, कसम है उसकी जिसके कबज़े में अबू हुरैरा की जान है, अगर जिहाद और हज न होता और माँ के साथ हुस्ने सुलूक, तो मैं चाहता कि गुलामी की मौत मरूं।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो गुलाम अपने परवर्दिगार की इबादत भी खूब अच्छी तरह करे और अपने मालिक का हक़, खैर ख्वाही फरमां बरदारी जो उसपर लाज़िम है अदा करे तो उसको दोहरा अज्र मिलेगा।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तीन आदमी हैं जिनको दोहरा अज्र मिलेगा। एक वह शख्स जो अहले किताब है, यानी यहूदी या नसरानी वह अपने नबी पर ईमान लाया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर भी, दूसरा वह गुलाम जिसने अल्लाह का हक़ भी अदा किया और मालिकों का हक़ भी अदा किया, तीसरा वह मर्द जिसके पास एक लौण्डी है उसने उसको खूब अदब सिखाया और बेहतरीन तरीके से तालीम व तरबियत की, फिर उसको आज़ाद किया और फिर उसी से शादी कर ली।

(बुखारी–मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

सत्य मार्ग अपनाओ
ताकि जन्नत पाओ

पढ़ते हैं हम दुरूद

हर रोज़ हर नमाज़ में
पढ़ते हैं हम दुरूद
हर शुब्ह और शाम में
पढ़ते हैं हम दुरूद
एहसान याद करते हैं
अपने नबी के हम
शुक्रे रब करते हैं फिर
पढ़ते हैं हम दुरूद
जब भूलते हैं बात हम
करते हैं याद ख़ूब
आता नहीं है याद तो
पढ़ते हैं हम दुरूद
जब भी दुआ को हाथ
उठाते हैं दोस्तो
पहले दुआ से याद कर
पढ़ते हैं हम दुरूद
रहमत की भी दुआ हो
और उस में हो सलाम
ऐसा ही तो तलाश कर
पढ़ते हैं हम दुरूद
तुम भी पढ़ो दुरूद
और तुम भी पढ़ो सलाम
हम भी सलाम पढ़ते हैं
पढ़ते हैं हम दुरूद
रहमत नबी पे या रब
और उन पे हों सलाम
हुब्बे नबी में या रब
पढ़ते हैं हम दुरूद

स्वतंत्रता तथा दासता

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

स्वतंत्रता और दासता एक दूसरे के विलोम हैं, दासता है तो स्वतंत्रता नहीं, स्वतंत्रता आई तो दासता गई, परन्तु यह दोनो दो प्रकार की हैं, एक का सम्बंध व्यक्ति से है तो दूसरे का राष्ट्र से, दासता व्यक्ति की हो या राष्ट्र की दोनो मानव के लिए असहनीय है।

200 वर्ष पहले कुछ मनुष्य (स्त्री अथवा पुरुष) दोनों बाज़ार में बिका करते थे वैसे ही जैसे पशु यही दास और दासियां होती थीं, उन पर उन का मालिक अत्याचार करता तो उसकी कोई पकड़ न होती थी, यह दासता कैसे आरम्भ हुई इस वर्णन को छोड़ते हैं परन्तु दासों पर जो अत्याचार होते थे उनको जान कर कलेजा मुँह को आता है, बेचारा दास अपने स्वामी के अत्याचार से व्याकुल हो कर भाग जाता तो उसके लिए कठोर दण्ड था, इस्लाम ने दासता को समाप्त तो न किया परन्तु दासों पर अत्याचार को रोका तथा दासों को स्वतंत्र करने को एक उपासना बताया और कई दण्डों में दास को सवतंत्र करने का आदेश दिया, इस दासता को संसार से समाप्त करने का श्रेय अंग्रेज़ों को जाता है, शार्प नामी एक अंग्रेज़ ने दासता के उन्मूलन का अभियान चलाया बहुत से भले अंग्रेजों ने उसका साथ दिया अंततः 1834 ई0 में ब्रिटेन शासन से दास्ता पूर्णतया समाप्त की घोषणा हो गई।

ब्रिटेन शासन उस समय पूरे संसार में फैला हुआ था, मुझे यह न ज्ञात हो सका कि दूसरे देशों से दासता कब समाप्त हुई परन्तु अब तो संसार में कहीं भी दासता नहीं पाई जाती है।

जहाँ व्यक्ति दासता समाप्त करने का श्रेय अंग्रज़ों को जाता है वहीं राष्ट्रीय दासता की बुरी नीव अंग्रेज़ों ही ने डाली है, यहां कुछ भ्रांतियां भी हैं। भारत के पुरातन निवासी कोल, भील, द्रावड़ हैं। आर्य लोग बाहर से आए निः सन्देह उन्होंने यहां के पुरातन निवासियों को दबाया कुचला और स्वयं शासक बन बैठे, परन्तु इसको हम राष्ट्र दासता इस लिए न कहेंगे कि आरियों ने भारत को उन्नतिशील सभ्यता दी, ज्ञान विज्ञान दिया भारत का निर्माण किया और वह यहीं के हो रहे। यहां की सम्पति किसी दूसरे देश को नहीं ले गये, इसी प्रकार मुसलामन बाहर से आए, यहां कुशासन था उन्होंने यहां के लोगों के सहयोग से अच्छा शासन स्थापित किया अत्याचार को समाप्त किया उन्नतिशील सभ्यता प्रदान की देश का निर्माण किया, यहां की सम्पति कहीं ले न गये, और वह यहीं के हो रहे अतः उनको भी साम्राज्य कहना अनुचित है, अलबत्ता अंग्रेज अपने देश से निकले और विभिन्न बहानों से पूरे संसार में फैल गये तथा संसार के अधिकांश देशों में अपनी शक्ति से अपना शासन स्थापित कर दिया और उन

शेष पृष्ठ......34.... पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

पूर्ण मानवता और समता व संतुलन–

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक नवासे (हज़रत ज़ैनब रज़ि0 के बेटे) का इन्तिक़ाल होने लगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुलवाया कि बच्चे का आख़िरी वक़्त है, ज़रा आ जाइये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए। आपके साथ आपके सहाबा हज़रत सअ़द बिन उबादा, मआज़ बिन जबल, उबै बिन कअ़ब और ज़ैद बिन साबित रज़ि0 भी थे, बच्चा गोद में लिया उसकी जाकनी (प्राणान्त) की हालत थी, शफ़क़त भरे नाना की आंखों में आंसू आ गए, एक सहाबी (हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ि0) मौजूद थे, कहने लगे: आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ऐसे प्रभावित होते हैं, फरमाया, मैं इंसान हूं मेरे दिल में भी महब्बत है और इतना भी नहीं तो वह इंसान क्या। यह अल्लाह की रहमत है। अपने बन्दों में से जिस बन्दे के दिल में चाहता है रखता, अल्लाह रहम करने वाले बन्दों पर रहम करता है[1]।

इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अल्पायु बेटे हज़रत इब्राहीम का देहान्त हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ ले गये और देख कर फरमाया मेरी आंखे नम हो रही हैं दिल ग़मज़दा है लेकिन अपनी ज़बान से सिर्फ वही कहूंगा जिससे मेरा रब राज़ी हो। ऐ इब्राहीम! तेरी जुदाई पर हम ग़मज़दा (शोकग्रस्त) हैं।

इस मौक़े पर सूरज ग्रहण हुआ। लोग कहने लगे कि बहुत बड़े नबी के बेटे के इन्तिक़ाल का यह असर मालूम होता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुना तो फ़रमाया देखो! यह सूरज चांद अल्लाह के हुक्म के ताबे हैं ये अपने निज़ाम के मुताबिक चलते हैं किसी के मरने जीने से उन पर असर नहीं पड़ता[2]।

ग़ौर कीजिए! किस कदर बड़ी बात है कि ऐसे मौके पर आदमी खुश होता है कि हमारी और हमारे बेटे की अहमियत समझी जा रही है। हमारे कुछ कहे बग़ैर खुद बखुद लोग अहमियत दे रहे हैं। अच्छा है कहने दिया जाए। नहीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसको बर्दाश्त नहीं किया कि किसी के अक़ीदे में बाल बराबर फर्क आए और वह खुदा के सिवा किसी और को आसमान व ज़मीन, सूरज चांद पर असर डालने वाला समझे।

यह ग़म के मौके की मिसाल थी, खुशी के मौके की भी मिसाल देखिये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महबूब चचाज़ाद भाई हज़रत जाफर रज़ि0 हबशा की हिजरत से मुन्तकिल (स्थानांतरित) हो कर मदीना

---

1. बुख़ारी शमाएल तिरमिज़ी नं0 1284
2. सही बुख़ारी, किताबुल कुसूफ़।

पहुँचे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे मिल कर बहुत खुश हुए इसी बीच में मुसलमानों की जीत की खुशखबरी पहुंची तो एक तरफ मुसलमानों की खुशी से और दूसरी तरफ अपने महबूब और अल्लाह के लिए कुर्बानी देने वाले मोमिन भाई की आमद की खुशी थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः मैं बता नहीं सकता कि दोनों खुशियों में कौन सी खुशी ज़ियादा है[1]।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इसी व्यापक विशेषता को देखिये कि आप इंसान थे, इंसानियत का तकाज़ा अपनी महब्बत के लायक अज़ीज़ के दीर्घकाल वतन वापसी के बाद से खुशी महसूस की जो उनके पूर्ण मानवता की दलील थी। इसी के साथ नबी होने और मुसलमानों के सरबराह होने के तअल्लुक से मुसलमानों की जीत की खबर से भी इस तरह खुशी महसूस की। और हकीकत पसंदी (यर्थाथवाद) की यह बात थी कि दोनों खुशियों का ऐतबार किया। इस तरह अमीर व नायक की हैसियत से खुशी का जो मौका था उसका हक अदा किया और इसी के साथ रिश्तेदारी और बिरादराना महब्बत का जो तकाज़ा था उसका भी हक़ अदा किया।

इनायत व मेहरबानी और बर्दाश्त की शक्ति–

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बलंद अख्लाक़, इनायत व नवाज़िश में सारी इंसानियत के इमाम व पेशवा थे। अल्लाह तआला का इरशाद है : बेशक आप बहुत अज़ीम अख्लाक वाले हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद इरशाद फरमाया कि अल्लाह ने मेरी तरबियत फरमाई है और बेहतरीन तरबियत फरमाई है।

हज़रत जाबिर रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह ने मुझे अच्छे अख्लाक और अच्छे कामों की तकमील के लिए नबी बना कर भेजा है।

हज़रत आयशा रज़ि0 से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख्लाक के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमायाः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अखलाक में कुरआन का मुजस्सम नमूना थे।

रहम व करम, कुशादा और कूव्वते बर्दाश्त में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जो मुकाम था, वहां तक किसी ज़हन व ख़्याल और तसव्वुर की पहुंच नहीं हो सकती। इस जगह चंद मिसालें पेश की जाती हैं:–

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नवाज़िश व करम और बड़े से बड़े दुश्मन के साथ दिलदारी और एहसान का एक नमूना वह था जो मुनाफिक़ीन के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैयी बिन सलूल के मामले में इख़्तियार किया। यह आदमी वह था जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खुली दुश्मनी के अल्फाज़ इस्तेमाल किये थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खिलाफ़ खुफ़िया साज़िशों में शरीक

---
1. सीरते इब्नपे हिशाम 2/359

रहा था और सब मुसलमान उसके इस रवय्ये से वाक़िफ़ थे, उसको मरने के बाद जब कबर में उतारा गया तो उनके बेटे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह जो पूरे मोमिन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पूरे वफ़ादार और मुहब्बत करने वाले थे, खवाहिशमंद हुए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके बाप के साथ कुछ तवज्जुह फरमा दें तो उनके मोमिन कामिल होने की क़दर में और उनके इकराम (सम्मान) में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस क़दर रवादारी फरमाई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां तशरीफ़ लाये और हुक्म दिया कि उसको कबर से निकाला जाए उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको अपने घुटनों पर रखा और अपना लुआबे दहन उस पर डाला और अपनी कमीज़ मुबारक उसको पहनाई[1]।

1. सही बुखारी किताबुल जनाएज़

हज़रत अनस इब्ने मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ चल रहा था आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक़्त नजरान की चादर पहने हुए थे जिसके किनारे मोटे थे, रास्ते में एक आराबी आपको मिला और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चादर पकड़ कर इस ज़ोर से खींचा कि आपकी गर्दन पर उसकी वजह से निशान पड़ गए फिर उस आराबी ने कहा ऐ मुहम्मद! अल्लाह का जो माल आपके पास है वह मुझे देने का हुक्म दीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी तरफ मुड़ कर देखा और हंसे और हुक्म दिया कि इसको कुछ दिया जाए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ैद बिन सअना यहूदी से एक मौके पर हज़रत बिलाल रज़ि0 के ज़रिये कर्ज़ लिया था जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़रूरमंदो की मदद के लिए अपने पास कुछ न होने की सूरत में लेते थे, यह भी एक ज़रूरत मंद के लिए था और उसकी मुद्दत भी तय हो गई थी लेकिन वह समय पूरा होने से पहले ही आपके पास आया और कर्ज़ का मुतालबा किया और आपका कपड़ा अपनी मुट्ठी में पकड़ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शान–ए–मुबारक से ज़ोर से खीचा और अपनी मुट्ठी में कपड़े को ले लिया और सख्त अल्फाज़ में बात की। फिर कहा कि तुम अब्दुल मुत्तलिब की औलाद बड़े टाल मटोल करेन वाले हो। हज़रत उमर रज़ि ने उसको झिड़का और सख़्त लहजे में बात की, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रवय्या मुस्कुराहट का रहा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि0 से फरमायाः उमर! हम और यह शख्स तुम्हारी तरफ से दूसरे रवय्या के मुसतहिक थे। मुझे तुम कर्ज़ जल्द अदा करने का मशविरा देते और इसके नरम तरीके से तकाज़ा करने को कहते।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया इसकी आदायगी की मुद्दत में अभी तीन दिन बाक़ी हैं। बहरहाल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि0 को उसके कर्ज़ की आदायगी का हुक्म दिया और बीस साअ ज़्यादा देने को फरमाया कि यह उसका मुआवज़ा है जो हज़रत उमर रज़ि0 ने उसको डरा दिया था और फिर यही बात उसके इस्लाम लाने का सबब बन गयी[1]।

जानवरों के साथ नरमी–

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेज़बान जानवरों के साथ भी नरमी का हुक्म फरमाते थे। शद्दाद बिन औफ कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ के साथ अच्छा मामला करने और नरम बरताव करने का हुक्म दिया है। इसलिए अगर जानवर को ज़बह भी करो तो अच्छी तरह करो। तुममें जो ज़बह करने जा रहा है वह अपनी छुरी पहले से तैयार कर ले। (यानी छुरी तेज़ कर ले और उसको उसके मुंह के सामने न करे ताकि जानवर यह देख कर पहले से परेशान न हो) और अपने ज़बीहे को आराम दो[2]।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 बयान करते हैं कि एक शख्स ने एक बकरी ज़मीन में ज़बह करने के लिए लिटाई उसके बाद छुरी तेज़ करना शुरु कियां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह देख कर फरमाया कि क्या तुम इसको दो बार मारना चाहते हो?. इसको लिटाने से पहले तुम ने छुरी तेज़ क्यों न कर ली[3]?

हज़रत इब्ने मसूद रज़ि0 बयान करते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ज़रूरत के लिए वहां से थोड़ी देर के लिए तशरीफ ले गए इस दरमियान हमने एक छोटी चिड़िया देखी उसके साथ उसके दो बच्चे थे। हमने दोनों बच्चे पकड़ लिये। वह यह देख कर अपने परों को फड़फड़ाने लगी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए और पूछा किसने उसके बच्चे छीन कर उसको तकलीफ पहुंचायी है? फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि उसके बच्चे वापस कर दो और वहां हमने चीटियों की एक आबादी देखी और उसको जला दिया आपने नापसंद किया और फरमाया इसको किसने जलाया है? अर्ज किया हम लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आग से अज़ाब देने का हक़ सिर्फ आग के रब को है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाब–ए–किराम को जानवरों को चारा पानी देने का आदेश देते और उनको परेशान करने और उनकी ताकत से ज़ियादा बोझ लादने को मना करते। आपने जानवरों की तकलीफ दूर करने और उनको आराम पहुंचाने को अज्र सवाब का सबब और अल्लाह से करीब होने का ज़रिया करार

---

1. मुसनद अहमद
2. सही मुस्लिम किताबुज़ज़बह
3. तबरानी

दिया। और उसके फज़ायल बयान फरमाए। हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि एक शख़्स कहीं से सफर पर था, रास्ते में उसको सख़्त प्यास लगी सामने एक कुंआ दिखाई पड़ा वह उसमें उतर गया बाहर आया तो देखा एक कुत्ता प्यास की शिद्दत की वजह से कीचड़ चाट रहा है उसने अपने दिल में कहा प्यास से जो मेरा हाल हो रहा था यही इसका भी है। वह फिर कुएं में उतरा अपने चमड़े के मोज़े पानी से भरे फिर उनको अपने दांतों से दबाया और ऊपर आ कर कुत्ते को पिलाया। अल्लाह तआला ने उसके इस अमल को कुबूल फरमाया और उसकी मग़फ़िरत फ़रमा दी। लोगों ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पशुओं और जानवरों के मामले मे भी अज्र है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर उस मख़्लूक में जो तरो ताज़ा जिगर रखती है अज्र है[1]।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फरमाया कि एक औरत को सिर्फ इस बात पर अज़ाब दिया गया कि उसने अपनी बिल्ली को खाना पानी नहीं दिया और न उसको छोड़ा कि वह ज़मीन के कीड़े मकोड़ों ही से अपना पेट भर ले[2]।

सुहैल बिन अमर रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र एक ऐसे ऊँट पर बैठ कर हुआ जिसकी पीठ लाग़री (क्षीणता) की वजह से उसके पेट से लग गयी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इन बेज़बान जानवरों के मामले में अल्लाह से डरो उन पर सवारी करो तो नरम तरीक़े से। उनका गोश्त इस्तेमाल करने के लिए उनको ज़बह करो इस हालत में कि वह स्वस्थ हों[3]।

हज़रत अबू हुरैरा रावी हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर तुम किसी हरीभरी जगह जाओ तो ऊँटों को ज़मीन पर उनके हक़ से वंचित न करो और अगर खुश्क ज़मीन पर जाओ तो वहां तेज़ चलो। रात को पड़ाव डालना हो तो रास्ते पर न डालो। इसलिए कि वहां जानवरों की आमद व रफ़्त (आवागमन) रहती है और कीड़े मकोड़े वहां पनाह (शरण) लेते हैं।

दुश्मनों के साथ अच्छा व्यवहार-

मक्का के विजय होने के अवसर पर जहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और आपके असहाब को दीन की दावत देने पर 13 साल निरन्तर वहां के लोगों की तरफ़ से सख़्त तकलीफ पहुंचायी गयी थी, जिसकी वजह से आप सबको वहां से निकलना पड़ा था। अब विजेता की हैसियत से आपका वहां प्रवेश हुआ और उनका सामना हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ कुरैशियो! तुम्हें क्या उम्मीद है इस समय मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगा? उन्होंने कहा हम अच्छी ही उम्मीद रखते हैं

---

1. सही बुख़ारी, किताबुल मसाक़ात
2. इमाम नौवी बरवायत मुस्लिक
3. सुनन अबू दाऊद

इस समय मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगा? उन्होंने कहा हम अच्छी ही उम्मीद रखते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शीलवान और सज्जन भाई हैं अच्छे और शरीफ भाई के बेटे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया मैं तुमसे वही कहता हूं जो यूसुफ अलैहिस्सलाम ने अपने भाईयों से कहा था: आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं जाओ तुम सब आज़ाद हो।

जब पूर्ण रूप से विजय हो गई और सब लोगों को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अमान दे दी केवल 9 आदमियों को छोड़ कर जिनको उनके संगीन जुर्मों की वजह से क़त्ल कर दिये जाने की इजाज़त दी। भले ही वह काबा के पर्दों के अन्दर मिलें, उनमें कोई वह था जो इस्लाम लाने के बाद इस दीन से फिर गया था, किसी ने धोखा दे कर किसी मुसलमान को क़त्ल किया था। किसी ने अपनी कविता द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निंदा और अपमान करने को मनोरंजन का सामान बना लिया था और उसको लोगों में फैलाता था। उनमें अब्दुल्लाह बिन सअ़द अबीसरह भी था, जो इस दीन से फिर गया था। इकरमा बिन अबी जहल था जो इस्लाम के प्रभुत्व और उसकी कामयाबी से घृणा के कारण और जान के ख़ौफ से अपना वतन छोड़ कर यमन चला गया था। लेकिन उकसी बीवी ने उसके फरार होने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसके लिए अमान मांगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह जानते हुए वह सारी दुन्या में आपके घोर शत्रु का लड़का है उसको अमान दी खुशी और स्वगत में इस तरह उसकी तरफ लपके कि चादर भी आपके शरीर से हट गयी थी[1]।

उनमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रिय चचा हज़रत हमज़ा का क़ातिल (जुबैर बिन मुतइम का गुलाम) वहशी भी था जिसने उनको कत्ल करके उनका कलेजा चबवाने में मदद की थी और किसास (हत्याकाण्ड) के तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको क़त्ल करने की इजाज़त दे दी थी लेकिन वह अब इस्लाम लाया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका इस्लाम कुबूल फरमाया[2]। इनमें हिबार बिन असवद भी था जिसने आपकी सुपुत्री हज़रत जैनब के पहलू पर बरछी से हमला किया। यहां तक की वह ऊँट से एक चट्टान पर गिर पड़ीं और गर्भपात की घटना घटित हुई। इस घटना के बाद वह भाग गया बाद में उसने इस्लाम कुबूल कर लिया। "सारा" तथा दो एक और गाने वालियों के सम्बन्ध में जो आपकी निंदा में कहे गए शेर भी गाती थीं, उनके सिलसिले में भी आपसे अमान चाही गई। आपने उन्हें अमान

---

1. जादुल मआद 3/411–422
2. सही बुख़ारी, बाब कत्ले हमज़ा, सीरत इब्ने हिशाम 2/72, दलाएलुन नबूवह, बैहक़ी 5/95

देदी और वह दोनों मुसलमान हो गईं[1]। उमैर बिन वहब एक योजना के अन्दर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल करने के इरादा से मदीना पहुंचा हज़रत उमर ने तेवर देख लिये। गला दबाए हुये उसको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास लाए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "उमर छोड़ो उमैर करीब आ जाओ" पूछा किस इरादे से आए हो? जवाब दिया बेटे को छुड़ाने आया हूं, फरमाया फिर तलवार क्यों लटकी है? उमैर ने कहा आखिर तलवारें बदर में किस काम आईं? फरमाया क्यों नहीं, तुमने और सफवान ने हिजर में बैठ कर मेरे क़त्ल की साज़िश नहीं की थी। उमैर यह सुन कर सन्नाटे में आ गया। बेइख़्तियार बोले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेशक तुम पैग़म्बर हो। खुदा की कसम मेरे और सफवान के अलावा किसी को इस मामले की खबर नहीं थी। चुनांचे मुसलमान हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा कराम से फरमाया अपने भाई को दीन सिखाओ कुरआन सिखाओ और इसके बेटे को आज़ाद कर दो। कुरैश जो उसके हाथ से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल करने की ख़बर सुनने का इन्तिज़ार कर रहे थे, उन्होंने उमैर के मुसलमान हो जाने की खबर सुनी[2]।

सफवान बिन उमय्या फतह मक्का के मौक़े पर जद्दा की ओर भाग गए ताकि वहां नाव द्वारा यमन प[illegible]च जाए। चुनांचे उमैर बिन वहब नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! सफवान बिन उमय्या अपनी कौम के सरदार हैं। वह आपसे डर कर समुद्र की ओर भाग गए हैं। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह खबर मिली तो आपने उन्हें भी अमान दे दी। हज़रत उमैर ने अर्ज़ किया कि अल्लाह के रसूल संतोश के लिए कुछ लिख दीजिए। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको निशान के रूप में अपनी पगड़ी दे कर सफवान के पीछे रवाना कर दिया। उन्होंने सफ़वान को समुद्र के किनारे जा लिया और कहा कि अल्लाह के रसूल ने तुम्हें अमान दी है अपने आपको हलाकत से बचाओ। सफ़वान ने कहा कि इस मुझे अपनी जान का खौफ है तो उन्होंने कहा कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत उदार हैं, सहनशील हैं अतः हज़रत उमैर उन्हें वापस लेकर मक्का आये। जब नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में पहुँचे तो सफवान ने कहा कि इस शख्स का खयाल है कि आपने मुझे अमान दी है। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस खबर की तसदीक की। सफवान ने दो महीने की छूट मांगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें चार महीने की छूट दी।

---

1. जादुल मआद 3/411
2. दलाइलुन नबूवह बैहकी 3/147–149, सीरते इब्ने हिशाम 1/661

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

मुसलमानों की कुछ विशेषताएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

दूसरी मिल्ली (धर्म सम्बन्धित सामूहिक) विशेषता, तहारत (पवित्रता) के प्रति विशिष्ट विचार धारा एवं व्यवस्था—

मुसलमानों की दूसरी मिल्ली विशेषता, पवित्रता के प्रति विशिष्ट विचारधारा एवं व्यवस्था है। इस अवसर पर स्वच्छन्दता (Cleanliness) तथा पवित्रता (Purification) का अन्तर भी समझ लेना चाहिए। हमारे अधिकांश गैर मुस्लिम मित्र एवं भाई इन दोनों के अन्तर से सामान्यतया अवगत नहीं। स्वच्छन्दता (नज़ाफ़त) का अर्थ है कि "शरीर निर्मल हो, वस्त्र साफ़ सुथरे हों" और पवित्रता (तहारत) का अर्थ है कि "शरीर अथवा वस्त्र के किसी भाग में मल मूत्र या ऐसी ही कोई गन्दी वस्तुएं, यथा शराब की कोई बूंद, रक्त एवं कुत्ते की लार आदि पशु का गोबर या हराम पक्षी की बीट इत्यादि न लगी हो। अब अगर शरीर या कपड़ों पर मल मूत्र की एक छींट भी पड़ जाये या रक्त की एक बूंद, गोबर बीट आदि लगी हो तो शरीर कितना ही स्वच्छ एवं निर्मल हो, कपड़े कितने ही सुथरे या उजले हों मुसलमान पवित्र नहीं माना जायेगा और इस शरीर एवं वस्त्र के साथ नमाज़ नहीं पढ़ सकेगा। इसी प्रकार यदि उसने शौच आदि के बाद भली प्रकार शरीर को नहीं धोया, या उसको स्नान की आवश्यकता है, वह नजिस (अपवित्र) है, वह नमाज़ नहीं पढ़ सकता। यही आदेश बरतनों, फर्श तथा भूमि के बारे में है। यह आवश्यक नहीं कि यदि उसका शरीर निर्मल और उसके कपड़े उजले हों तो वह पवित्र (ताहिर) भी है। उपरोक्त निषिद्ध एवं वर्जित वस्तुओं के लग जाने से शरीर अथवा वस्त्र अपवित्र हो जाता है और प्रयोग के योग्य नहीं रहता अर्थात ऐसी अवस्था में नमाज़ आदि नहीं पढ़ी जा सकती है।

तीसरी मिल्ली विशेषता उनके खान पान की व्यवस्था जो कुरआन मजीद के आदेशों के अधीन है—

मुसलमानों की तीसरी मिल्ली विशेषता यह है कि वह खाने पीने तथा पशु पक्षियों का मांस प्रयोग करने में स्वतन्त्र नहीं है कि जो मन चाहे खायें पियें। उनके लिए कुरआन मजीद तथा शरीअ़त में हलाल एवं हराम (वैध एवं अवैध) निषिद्ध (Prohibited) तथा अनुमोदित (Permissible) अर्थात ख़बीस तथा तैयब के मध्य सीमांत रेखा खींच दी गई है, वह इसका उल्लंघन नहीं कर सकते। पशु पक्षियों के बारे में इसके पाबन्द है

कि उनको बिना शरई तरीक़े पर ज़िबह किये और ज़िबह के समय अल्लाह का नाम लिये बिना (यथा बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहे बिना) उनका गोश्त प्रयोग में नहीं ला सकते। यदि कोई पशु शरई तरीक़े पर ज़िबह नहीं हुआ या शिकार करने में किसी जानवर को ज़िबह करने की नौबत नहीं आई और स्वयं मर गया तो वह उनके लिए मुरदार का हुक्म रखता है। इसी प्रकार यदि किसी जानवर को ज़िबह तो किया जाये, परन्तु वह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की नियत से हो अथवा किसी पीर, फ़कीर, देवी–देवता, पैग़म्बर, शहीद अथवा वली आदि के नाम पर बलि दी जाये तो वह मुसलमान को प्रयोग में लाना अवैध है। जानवरों में सुअर तो ज़िन्दा अथवा मुरदा प्रत्येक अवस्था में सदैव के लिए हराम तथा नजिस है। कुछ जानवरों का खाना और मांस हराम है यद्यपि वह अपने अस्तित्व के विचार से नजिस नहीं, यथा हिंसक पशु जैसे शेर, चीता, तेंदुआ आदि। इस प्रकार अनेक पक्षी मुसलमानों के लिए हलाल और कुछ हराम हैं, अवैध पक्षी यथा शिकार करने वाले अथवा पंजे से पकड़ कर खाने वाले जैसे चील, शिकरा, बाज़ आदि तथा स्वयं शिकार न करने वाले चोंच से खाने वाले यथा मुर्ग़, कबूतर, मुर्ग़ाबी आदि हलाल हैं। यह वास्तव में इब्राहीमी सभ्यता का प्रतीक है और इन्हीं की अभिरुचि एवं अन्तःप्रवृत्ति को इस बारे में आदर्श मात्र मान कर मुसलमानों को, वह चाहे संसार के सिकी भी देश अथवा इतिहास के किसी युग में हुए हों, उन्हें इसका पालन करना आवश्यक है। हिन्दुस्तानी मुसलमान भी अपने प्रत्येक युग में इसी खान पान व्यवस्था के पाबन्द रहे हैं, और इस समय भी वह अधिकांश इस्लामी देशों की अपेक्षा, अधिक सतर्क, पाबन्द तथा भावुक रहे हैं, जबकि अन्य देशों के मुसलमान जो पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति एवं शिक्षा से अधिक प्रभावित हुए हैं, तथा धन एवं ऐशवर्य के बाहुल्य ने उनकी धार्मिक जीवन व्यवस्था को और भी क्षीण कर दिया है अपेक्षाकृत कुछ स्वतन्त्र विचारधारा रखने वालों की संख्या बहुत कम है यही दशा शराब के मामले में भी है जो अति आरम्भ काल से इस्लामी शरीअत में घोर अवैध तथा हराम है और उसको "उम्मुल ख़बाइस" (दुष्कर्मों की जननी) की संज्ञा दी गई है। मुसलमानों के लिए शराब किसी भी दशा अथवा व्यवस्था में वैध नहीं। इसके बारे में भी हिन्दुस्तानी मुसलमान दूसरे देशों के प्रगतिशील एवं पाश्चातय सभ्यता से प्रभावित मुसलमानों की अपेक्षाकृत कहीं अधिक सतर्क तथा धार्मिक क्रियाओं के पाबन्द रहे हैं।

इंसानी जीवन के कुछ मौलिक सिद्धान्त

–प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी –मौ0सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

कुर्आने मुक़द्दस के आखरी पारे की सू–रए–वल अस्र 1–3/103 में अल्लाह तबारक व तआ़ला जो इंसानों का बनाने वाला है वह कह रहा है ज़माने की क़सम कि सारे इंसान वास्तव में घाटे में हैं, अगर किसी से यह कह दिया जाये कि आप घाटे में हैं, तो दौड़ पड़ेगा, इसलिए कि घाटे का शब्द बहुत ज़ियादा खतरनाक है, और यह अल्लाह तआला ने सारे इंसानों को सम्बोधित करते हुए कहा है अब ध्यान दीजिये कि, आमदनी में घाटा क्या है, पढ़ने वाले का ध्यान क्या है, कहने वाले का घाटा क्या है, सुनने वाले का घाटा क्या है, सूरे की आखिरी यानी तीसरी आयत में इन तमाम घाटों से बचाने के लिए या यूं कह लें कि तमाम घाटियों के घाटों से बचाने के लिए अल्लाह तआला ने फरमाया कि जिन के अंदर चार सिफात होंगी या जो चार काम करेंगे उनको रहमत व मग्फिरत का परवाना अल्लाह की ओर से मिलेगा और वह घाटे से बच जायेंगे–

1. जो अपने अंदर ईमान का करंट पैदा कर लें यानी ईमान ले आयें और अक़ीदा ठीक कर लें, क्योंकि अल्लाह तआला शिर्क को माफ नहीं करेगा, और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी शिर्क करने वाले की सिफारिश नहीं करेंगे।

2. दूसरी सिफत यह कि वह नेक आमाल पर अमल करने वाला बन जाये, कहने में यह बात बहुत आसान लेकिन है ज़रा मुश्किल इसलिए कि आमाले सालिहा क्या हैं इस का समझना जरूरी है, अमले सालेह वह हैं जिन्हें रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कर के दिखाया है या बताया है या सहाबये किराम ने उसको इख्तियार किया है, और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पसंद फरमाया है वह है अमले सालेह, न कि हम और आप जिसको अमले सालेह कहें, इसलिए हो सकता है कि आप की रुचि भ्रष्ट हो गई हो, आप कहें कि मेरी पसंद यह है तो न मेरी पसंद न आपकी पसंद, पसंद तो सिर्फ अल्लाह और उसके रसूल की इसी लिए अल्लाह के रसूल ने फरमाया कि मुझ से महब्बत करो, क्योंकि जब महब्बत करोगे तो तुम्हारी पसंद व रुचि ठीक हो जायेगी इसी लिए इंसानों को उनकी पसंद व नज़र पर नहीं छोड़ा गया वरना तो मामला ही चौपट हो जाता, परिणाम स्वरूप जो हमारे हुज़ूर ने फरमाया बस वही अमले सालेह है।

घाटे से बचने की यह दो सिफतें हुईं इनमें भी ईमान के दर्जे हैं–

1. तस्दीक यानी मानना
2. महफूज करना
3. दिल के अन्दर बैठ जाना, सहाबा रज़ि0 का ईमान इसी तीसरे दर्जे का था इसी लिए हजरत मौलाना अली मियाँ साहब रह0 ने लिखा है कि सहाब–ए–किराम के सामने जब अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुछ फरमाते थे तो यह पता करना मुश्किल हो जाता था कि हुज़ूर की ज़बान से हुक्म पहले निकला है या सहाबा के क़दम पहले अमल के लिए उठे हैं हज़रत हंजला रज़ि0 अपने घर में थे कि अचानक जिहाद का एलान हुआ तो नहाये बिना निकल गये और शहीद हो गये फिर फरिश्तों ने उन्हें नहलाया यहां तक कि उनका नाम ही "गसीलुल मलाइका" फरिशतों का गुस्ल दिया हुआ पड़ गया।

तीसरी चीज़ या तीसरी सिफत यह है कि एक दूसरे को हक की तलक़ीन करें और तलकीने हक जब आसान होगा कि इंसान खुद ईमान ला कर और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताये हुए रास्ते पर अमल करके अल्लाह का महबूब बन जाये और जब महबूब बन जायेगा तो न उसको कोई डर होगा न वह गमगीन जब यह दोनों बातें हासिल हो जायेंगी तो हक बात कहने में परेशानी क्या? इसीलिए कहा गया कि हक की तलक़ीन करते रहो और हक़ क्या है? इसकी सूची बड़ी लंबी है इसमें अल्लाह के हुकूक और बंदों के हुकूक सब शामिल हैं मसलन एक शख्स है जो अल्लाह को नहीं पहचानता उसको हक की तलकीन यह है कि उसके सामने अल्लाह की बड़ाई को खोल खोल कर बयान किया जाये और बुत परस्ती की बुराई उसके दिल में बिठाई जाये, इसी प्रकार शिर्क करने वाले के साथ भी किया जाये कि शिर्क व तौहीद में फर्क वाजेह हो जाये, अगर हम आप देख रहे हैं कि कब्रों पर सजदा हो रहा और निगाह फेर कर चले जा रहे हैं, रोकने की कोई तदबीर न की तो आपने हक की तलक़ीन वाली आयत पर अमल नहीं किया, यह हर शख्स की उमूमी जिम्मेदारी है, अब घर वाली बात लीजिए मसलन दादा का इंतिकाल हुआ, अब अगर बड़ा भाई अकेले सारे तरके पर कबजा करना चाहे तो उस समय सही बात बताना कि इसमें तुम्हारे दूसरे भाईयों का भी हक है, और यह हक कुर्आन में मौजूद है यह भी हक बात की तलकीन है अब अगर कोई नहीं करता तो गोया उसने इस आयत पर अमल नहीं किया, अब अगर यह बात कहें कि जब हक बात कहेंगे तो खतरा इस बात का है कि वह नराज़ हो जायेगा या बुरा भला कहने लगेगा तो चौथी सिफत की तरफ इशारा किया गया कि ऐसी सूरत में सब्र से काम लीजिए और ईंट का जवाब पत्थर से न देने लगिये बल्कि हम लोग यही करते हैं, हक बात कहने का बहुत से लोगों को शौक होता है लेकिन सलीका नहीं आता, जिसकी बिना पर चौथे पर अमल न हुआ, और कमी रह गयी जिससे मामला खराब हो गया, मालूम हुआ कि चारों सिफात पर अमल से ही हम खसारे और नुकसान से बच सकते हैं वरना नहीं, इन्हीं चारों सिफतों को अपना कर हम अल्लाह की रहमत व मगफिरत का परवाना अल्लाह की तरफ से हासिल कर सकते हैं अल्लाह हम सब को अपने महबूब के तरीके पर चल कर ज़िन्दगी गुजारने की तौफीक नसीब फरमाये। आमीन

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज की दशा

—अनुवादः जावेद इक़बाल

—मौ0सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0

किसी भी देश और क़ौम के इतिहास में समाज की भूमिका प्रमुख होती है साहित्य और दर्शन, नृत्य या संगीत, भाषा और संस्कृति सभी कुछ दूसरे स्तर की चीज़ें हैं। यदि किसी क्षेत्र में सभ्य और स्वस्थ समाज का अभाव होगा तो कोई भी हुकूमत, कोई भी गुरुकुल, कोई भी धर्म या दर्शन वहां के निवासियों को सुख और शान्ति से ज़िन्दगी गुज़ारने में मदद नहीं दे सकेगा। वह समाज जो भले और बुरे की पहचान रखता हो, न्याय और अन्याय के अन्तर की उस में समझ हो, अपना हित और अहित करने वालों की परख हो, किसी भी देश के लिए बड़ी सम्पत्ति है। ऐसे समाज में रहने वाला इंसान यदि बुराई, अन्याय और अत्याचार को रोकने में समर्थ नहीं होता फिर भी यह क्या कम उपलब्धि है कि वह उन का साथ नहीं देता, समर्थन नहीं करता और मन ही मन रोता रहता है सभ्य समाज की कमी को कोई भी वस्तु पूरा सकती है। क्योंकि समाज ही हुकूमत देता है, समाज ही प्रशासन देता है। जब समाज दूषित हो जाता है तब अकुशल और भ्रष्ट लोग हर क्षेत्र में प्रभावी हो जाते हैं और नतीजे में वह देश अपनी साख खो बैठता है और जनता विभिन्न कष्ट झेलने पर मजबूर हो जाती है। दूषित समाज में जब लोग भले बुरे की पहचान खो बैठते हैं, न्याय अन्याय का अन्तर मिट जाता है जंगल का क़ानून चलने लगता है जो भी ऊँची कुर्सी पर बैठ गया उसके सामने सर झुका दिया, उसके गुण गाने लगे और चढ़ते सूरज के पुजारी बन गए तब स्थिति बहुत गम्भीर होती है और यह चिन्ता का विषय होता है। सभ्य समाज में यदि कभी अकुशल और भ्रष्ट लोग शासन—प्रशासन पर क़ब्ज़ा जमाने में सफल होते हैं तो उन का क़ब्ज़ा अधिक समय तक जारी नहीं रहता और शीघ्र ही उसमें परिवर्तन आ जाता है।

भारत की आज़ादी के बाद सभ्य और स्वस्थ समाज का निर्माण देश की पहली ज़रूरत थी जिस पर ध्यान नहीं दिया गया। नैतिक शिक्षा का पूर्ण रूप से बहिष्कार कर दिया गया। यदि राष्ट्र रूपी नैतिक मूल्यों का उपहार देने का प्रयत्न करते। उस समाज में कोई जुल्म व अन्याय से हाथ न मिलाता, उसमें हक़ बात कहने का साहस होता और अत्याचार का हाथ पकड़ने की हिम्मत होती। इसके लिए ईश्वर का विश्वास और खुदा का ख़ौफ़ ज़रूरी होता है इस्लाम की शिक्षा जिस से यह देश भली भांति परिचित था, इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकती थी।

देश का हित चाहने वाले प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह देश की मूल समस्याओं का जायज़ा ले, वह समस्यायें जिन्होंने हमारे समाज को दीमक की तरह चाट कर अन्दर से

खोखला कर दिया है और अनेक क्षेत्रों में भौतिक तरक्की के होते हुए भी आम लोगों तक उनका लाभ नहीं पहुंच सका है।

सबसे पहली ख़राबी जो हमारे देश में बहुत तेज़ी से फैली है वह है इंसानी जान के महत्व और उसके मूल्य को न पहचानना। किसी भी समाज के लिए यह सबसे भयानक खतरा कहा जा सकता है। इंसान की जान का महत्व हीन हो जाना किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति के लिए ही नहीं बल्कि इंसानियत के लिए मौत का पैग़ाम होता है। जब किसी देश में भाई भाई के खून का प्यासा हो जाता है तब उस देश की विशाल जनसंख्या, उपज और खनिज के बड़े बड़े भण्डार, उच्च कोटि की शिक्षा और तकनीक कोई चीज़ लाभप्रद सिद्ध नहीं होती यह बहुत आश्चर्य की बात है कि वह देश जिसने प्राचीन काल में प्रेम की वंशी बजाई थी, संस्कृत फ़ारसी और फिर हिन्दी उर्दू में महब्बत के गीत गाए थे, सूफ़ी और सन्तों ने इंसानियत के आदर और सम्मान का पाठ पढ़ाया था और अन्त में गांधी जी ने सत्य और हिंसा का सन्देश पूरी दुन्या को सुनाया था आज उसी देश में इंसानी जान की कोई क़ीमत नहीं है।

दूसरी ख़राबी संकीर्णता और साम्प्रदायिकता की है जो भाषा संस्कृति और सभ्यता के मार्ग से होते हुए अब क्षेत्रीयता तक पहुंच चुकी है। इसी बीमारी ने हमारे देश को प्राचीन काल में टुकड़े टुकडे कर दिया था और विदेशी शक्तियों को आमंत्रित करने में विशेष भूमिका निभाई थी। यह बीमारी आज फिर जोर पकड़ रही है। यदि इसे क़ाबू में न किया गया तो एक बार फिर नफ़रत का उन्माद बोतल के जिन्न की तरह बाहर आ सकता है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में और फिर प्रदेशों के विभिन्न अंचलों में एक दूसरे के प्रति द्वेष और विद्रोह की भावना पाई जाती है। यहां विभिन्न जातियों और उपजातियों के बीच भी भेद भाव और घृणा की दीवारें खड़ी हैं। एक जाति दूसरी जाति के प्रति अन्याय और अत्याचार किये जाने में संकोच नहीं करती बल्कि इसको अपनी जाति की सेवा समझते हुए शुभ कार्य मानती हैं किसी विभाग में कोई विशेष जाति का अधिकारी पहुंच जाने पर उस का प्रयास होता है कि अपनी ही बिरादरी के लोगों को सेवा के अवसर दिये जायं और उन्हें विशेष लाभ पहुंचाये जायें, चाहे उनमें कुशलता हो या न हो। हमारे समाज का यह रोग उसे दीमक की तरह चाट रहा है और सम्पूर्ण प्रशासन इस बीमारी के कारण खोखला और कमज़ोर हो गया है।

तीसरी बड़ी ख़राबी जो हमारे देश में बड़ी तेज़ी से फैली है और राष्ट्र निर्माण के कार्य में पहाड़ जैसी बाधा बन कर खड़ी हो गई है, अति शीघ्र धनवान बनने की इच्छा है। धन दौलत पैदा करने का भूत देश के बच्चे–बच्चे पर सवार हो गया है। धन दौलन कमाना और उसके लिए प्रयास करना बुरा नहीं है मगर परिश्रम करके एक एक सीढ़ी चढ़ते हुए यदि

धन कमाया जाय तो वह अपने ही नहीं बल्कि राष्ट्र के हित में कल्याणकारी होगा। मगर एक ही रात में धनवान बन जाने की इच्छा हर योजना को असफल कर देती है, हर निर्माण कार्य को कमज़ोर कर देती है। यह वह बीमारी है जो कैंसर की तरह हर व्यक्ति को चिपट गई है इस के कारण प्रत्येक व्यक्ति बड़े सा बड़ा खतरा लेकर अपने घर परिवार के सुख के लिए आम जनता को नुकसान पहुंचाने वाले कार्य करता है।, अपने अधिकारों का दुरुपयोग करता है छोटे से छोटा काम ईमानदारी से करना असम्भव होता जा रहा है हर काम की कीमत चुकानी होती है, इसे रिश्वत का नाम दिया जाय या "सुविधा शुल्क" कहा जाए। शब्दों के हेर फेर से कोई अन्तर नहीं पड़ता। हर व्यक्ति दूसरे की मजबूरी से लाभ उठा रहा है। इंसानी हमदर्दी, मानव प्रेम और देश भक्ति केवल कोरे शब्द हैं इन भावनाओं का अनुभव अब कहीं नहीं होता। धन बटोरने का यह पागलपन देख कर ऐसा लगता है कि इस देश में सभी नैतिक मूल्यों का पतन हो चुका है। आपसी घृणा और धन कमाने की प्रतियोगिता ही शेष बची है। घृणा का निशाना कभी कोई ज़ात–बिरादरी बनती है, कभी कोई भाषा बनती है और कभी कोई राजनैतिक पार्टी बनती है। हर हाल में इंसानियत का खून होता है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि इस्लाम की शिक्षा समाज की हर बुराई को दूर करने की ताक़त रखती है। अब हम उपरोक्त तीनों ख़राबियों के विषय में कुरआन का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। सबसे पहली खराबी इंसानी जान का मूल्यहीन हो जाना है जिसके नतीजे में नफरत जन्म लेती है और हत्या आम होती है अल्लाह कुरआन मे इस विषय पर ऐलान फरमाता है "जो व्यक्ति किसी की अनर्थ में हत्या करेगा बिना इस कारण कि हत्या का बदला लिया जाए या देश में आतंक फैलाने की सज़ा दी जाय तो उसने मानो तमाम लोगों की हत्या की, और जो उसके जीवन का कारण बना तो जैसे तमाम लोगों के जीवन का कारण बना।"

निष्कर्ष यह कि एक इन्सानी जान इतनी क़ीमती है कि उसकी तुलना तमाम इंसानों की ज़िनदगी से की गई हैं हज़रत मुहम्मद साहब का भी यही उपदेश है इंसान इतना बहुमूल्य है कि खुदा की मख़लूक़ को खुदा का परिवार कहा गया है।

दूसरी ख़राबी साम्प्रदायिक नफ़रत की है जो धार्मिक, जात–पात और क्षेत्रीय आधार पर इंसानों के बीच भेद भाव और तनाव पैदा कर रही है। जब कि मानवता के एकत्व का सिद्धान्त इस्लाम का प्रमुख सिद्धान्त है। कुरआन में जगह जगह स्पष्ट किया गया है कि इंसानों का पैदा करने वाला एक ही है और इंसानियत का पिता भी एक है, सब इंसान एंक ही मां बाप की सन्तान हैं, ज़मीन भी एक है और जिन्दगी की ज़रूरतें भी सब की समान हैं अतः किसी

भी इंसान की किसी दूसरे इन्सान पर रंग, नसल, भाषा या क्षेत्र के आधार पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं है। कुरआन में कहा गया है "लोगो हम ने तुम को एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया है और तुम में क़ौम–क़बीले बनाए हैं, ताकि एक दूसरे की पहचान में आसानी हो" (49:13) हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने समानता की इस भावना को प्रबल करने के उद्देश्य से फ़रमाया था "लोगो तुम्हारा पालनहार भी एक है और तुम्हारा बाप भी एक है, याद रखो किसी अरबवासी को गैर अरबवासी पर और किसी ग़ैर अरब वासी को अरब वासी पर और किसी काले को गोरे पर और सिकी गोरे को किसी काले पर कोई फ़ज़ीलत प्राप्त नहीं है, यदि कोई श्रेष्ठता है तो केवल खुदा के ख़ौफ़, भक्ति और पवित्र आचरण के आधार पर ही हो सकता है।"

तीसरी ख़राबी जो शीघ्र अति शीघ्र धनवान बन जाने की भावना का पैदा होना है, जो देश के निर्माण में बाधक और योजनाओं के विफल होने का कारण है इसके विषय में इस्लाम ने जो इलाज बताया है वह ईश्वर का भय और परलोक की जवाबदेही का विश्वास मन में बिठाना है। जब यह यक़ीन होगा कि कोई शक्ति है जो हमें देख रही है और हमें उसके पास जा कर अपने कर्मों की जवाबदेही करना है तो इंसान हर तरह की धोखा धड़ी, रिश्वत और अधिकारों के दुरुपयोग से स्वयं को रोकने का प्रयत्न करेगा। देश प्रेम की भावना भी इस सम्बंध में प्रभावकारी सिद्ध हो सकती है मगर सच्चा देश प्रेम भी ईश्वर की सत्ता और परलोक की जवाबदेही पर विश्वास के मार्ग से ही मन में आता है। इस्लाम ने इंसान के नैतिक गुणों को धन दौलत पर महत्व दिया है। इस्लाम ने इंसान को दौलत का परस्तार (लक्ष्मी का पुजारी) बनने से रोका है और धन दौलत का उचित महत्व समझाया है। उसने इसे खुदा की नेमत बताने के साथ साथ इंसान के लिए फ़ितना और आज़माइश बता कर इससे सावधान रहने का संकेत दिया है। कुरआन कहता है "और निगाह उठा कर भी न देखो दुन्या की शानदार ज़िनदगी की ओर जो हमने उनमें के विभिन्न लोगों को दे रखी है, वह तो हमने परीक्षा में डालने के लिए दी है, और तेरे खुदा की दी हुई आजीविका वही अच्छी है जो हलाल हो और देर पा (अधिक लाभकारी) है (20:131) "लोगो! तुम को माल की ज़ियादती की लालसा ने भुलावे में डाल दिया यहां तक कि तुम ने क़बरें जा देखीं, सावधान तुम्हें शीघ्र मालूम हो जायगा, पुनः सावधान! तुम्हें शीघ्र मालूम हो जायगा, सावधान यदि तुम जानते और विश्वास करते (तो भुलावे में न पड़ते) तुम अवश्य ही नर्क देखोगे, फिर

उसको ऐसा देखोगे कि आंखों देखा विश्वास हो जायगा, फिर उस दिन तुम से नेमत (जो कुछ दुन्या में उपभोग किया) के विषय में पूछताछ होगी" (सूरः तकासुर)।

यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि मुसलमानों की ज़िन्दगियों को देख कर किसी प्रकार की शंका इस्लाम के विषय में नहीं करना चाहिए। देश के बुद्धिजीवियों का कर्तव्य है कि वह इस्लाम और मुसलमान के अन्तर को समझें। मुसलमानों की ख़राबियों को इस्लाम की ख़राबी न समझा जाये। इस्लाम के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को स्वीकार करके स्वतंत्रता के बाद देश में तेज़ी से फैली हुई बुराइयों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इस समय दुनिया की स्थिति अन्धेरे में हाथ पैर चलाने के समान है और उसके सामने एक बड़ा शून्य है वह किधर जाय कौन सा मार्ग अपनाये उसे नहीं मालूम। सारे इल्म, सारे फलसफ़े, सारी व्यवस्थायें फेल हो चुकी हैं। इस समय दुन्या को सही और सच्चे मार्गदर्शन की ज़रूरत है।

प्रत्येक क़ौम अपनी संस्कृति, सभ्यता और अपने साहित्य तथा दर्शन पर गर्व करती है। अब दुन्या का धुर्वीकरण हो रहा है एक केन्द्र पर जमा होने की इच्छा दिनों दिन प्रबल होती जा रही है, इस स्थिति में ज़रूरत है एक ऐस सन्देश की जो इन्सान दोस्ती, प्रेम महब्बत और समानता के आधार पर किसी में कोई भेद भाव न करे। सब का रिश्ता एक सृष्टा से जोड़े और उस मालिक की सत्ता को विश्व में स्थापित करे।

आज भारत उस स्थिति में है कि वह इस सन्देश को स्वीकार करके यदि क़दम आगे बढ़ाये तो दुन्या का नेतृत्व शीघ्र ही उसके हाथ में होगा।

बुराइयों का एक मुख्य कारण इंसान के दिल से खुदा का ख़ौफ निकल जाना है। जब तक उसके दिल में खुदा के द्वारा प्रत्येक क्षण देखे जाने और निगरानी किये जाने का विश्वास मजबूत नहीं होगा और परलोक मे अपने छोटे बड़े प्रत्येक काम की जवाबदेही का यकीन नहीं होगा तब तक इंसान धोखाधड़ी, रिश्वत, अन्याय, झूठी गवाही, हत्या, अत्याचार, बलात्कार, आदि बुराइयों से स्वयं को नहीं रोक सकता। खुदा का डर यदि इंसान पर हर दम सवार रहे तो वह कोई अनैतिक कार्य नहीं कर सकता।

अतः निष्कर्ष यह कि भारत के पुनरुत्थान के लिए मुख्य रूप से हर प्रकार के भेद भाव और जातिवाद की गुटबन्दी को त्याग कर एक आदर्श समाज की स्थापना करना होगी।

दूसरे यह कि एक अकेले महान, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता, सर्वश्रृष्टा, अर्रहमान की शुद्ध शक्ति और उसका भय सीखना होगा।

जब हम भारतवासी उपरोक्त दो हकीकतों को स्वीकार करके कदम से क़दम मिला कर आगे बढ़ेंगे तो हर प्रकार की बुराइयों का स्वतः उन्मूलन आरम्भ होगा। उस समय महान भारत विकास के पथ पर आगे बढ़ते हुए निश्चित ही विश्व का नेतृत्व करेगा।

❖❖❖

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

–शीबा खान

आज के इस भौतिकवादी युग में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार देने का दावा ज़रूर किया जा रहा है परन्तु आज भी कहीं न कहीं महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा क्षीण ही समझा जाता है और उन पर किसी न किसी प्रकार से अत्याचार किये जाते हैं। एक ओर वह दासी बनाई जाती है, मर्द उसका स्वामी यानि मालिक बनता है। उसे बचपन में पिता की, जवानी में पति तथा विधवा होने पर पुत्र की दासी बन कर रहना पड़ता है। उसे स्वामित्व से दूर रखा जाता है और उस पर विवाह के बहुत ही कठोर नियम लगाये जाते हैं। जिसके अनुसार वो अपनी मर्ज़ी के बगैर एक मर्द के हवाले की जाती है।

इतिहास गवाह है कि स्त्री का अस्तित्व दुनिया में शर्म, गुनाह व अपमान का अस्तित्व था। बेटी का पैदा होना पिता के लिए अपमान था। जाहिल तो जाहिल बल्कि बुद्धिजीवियों व पेशवाओं में यह प्रश्न कई सालों तक बना रहा कि औरत इन्सान भी है या नहीं? और ईश्वर ने इसे रूह दी है या नहीं? यहां तक स्वयं औरत भी यह भूल गई थी कि दुनिया में वो कोई अधिकार रखती भी है या नहीं? ऐसी स्थिति में जिसने पूरी इन्सानी सोच को बदल कर रख दिया वो इस्लाम है। इस्लाम ने ही मर्द व औरत की सोच को बदला और एक दूसरे के प्रति प्रेम व आदर पैदा किया तथा इस्लाम ने पिता को बताया कि बेटी का अस्तित्व पिता के लिए अपमान नहीं बल्कि वरदान है और उसकी देखभाल करना तुझे स्वर्ग का अधिकारी बना सकता है। हालांकि इस्लाम धर्म को लेकर यह गलतफहमी है कि इस्लाम में औरत को कमतर समझा जाता है लेकिन अगर हम इस्लाम का गहराई से अध्ययन करें तो हमें यह पता चलेगा कि इस्लाम ने महिलाओं को चौदह सौ साल पहले जो अधिकार व सम्मान दिया है वो आज के आधुनिक कानून भी उसे नहीं दे पाये हैं।

मैं अपने लेख के द्वारा यह बात स्पष्ट करना चाहती हूं कि इस्लाम में महिलाओं का स्थान पुरुषों के समान है अपितु वो पुरुषों के शरीर ही का एक भाग मानी गई है और महिलाओं को कई रूपों में अधिकार प्रदान किये गये हैं।

बेटी के रूप में–

इस्लाम में महिलाओं को बेटी के रूप में जीने का वैसे ही अधिकार दिया है जैसा कि बेटों के पास है। इस्लाम आने से पहले अरब में महिलाओं की स्थिति ठीक नहीं थी इनके यहां जब बेटी का जन्म होता, तो उसे जिन्दा दफन कर दिया जाता था। कुर्आन में उनकी इसी हालत की तरफ इशारा किया गया है।

जब उनमें से किसी को बेटी के जन्म का शुभ समाचार सुनाया जाता है तो उसका चेहरा सियाह हो जाता है और वह दुखी हो उठता है इसी बुरी खबर के कारण वह लोगों से अपना मुँह छिपाता फिरता है वह

सोचता है कि उसे जिन्दा रखे या फिर जीवित दफन कर दे। कैसे बुरे फैसले हैं जो ये लोग करते हैं। (सूरह नहल 16:58—59)

इसका एक कारण यह भी था कि जाहिलियत काल में अरब के अलग—अलग कबीलों में आये दिन लड़ाईयां करने के लिए ज्यादा से ज्यादा पुरुषों की आवश्यकता थी इसका नतीजा ये हुआ कि पुरुषों को औरतों से ज्यादा महत्व दिया जाने लगा। इस कारण अरब के लोगों में यह भावना उत्पन्न हो गई थी कि बेटी को ज़िन्दा रखने में हानि ही हानि है अतः तभी इसका आसान इलाज अरबों ने यह निकाला कि जन्म लेते ही उसे जिन्दा दफ़न कर देते हैं। लेकिन इस्लाम ने सबसे पहले इस रस्म को खत्म किया और खुले तौर पर अल्लाह ने कुर्आन में फरमाया— अल्लाह ही आसमानों तथा ज़मीनों का मालिक है वो जो चाहता है पैदा करता है जिसे चाहता है औलाद में लड़कियां देता है तथा जिसे चाहता है लड़के देता है। तुम इस पर गुस्सा तथा आपत्ति दिखाने वाले कौन हो।

(सूरह शूरा 42:49)

इसके अलावा औरत को बेटी के रूप में शिक्षा का अधिकार भी इस्लाम ने दिया है कुर्आन में है कि वे लोग बहुत नुकसान में पड़ गये जिन्होंने अपनी सन्तान को बिना ज्ञान के मूर्खता के कारण नष्ट किया।

(सूरह अनआम 4:140)

पत्नी के रूप में-

इस्लाम में औरत इन्सानी दुनिया का ही एक हिस्सा है फिर चाहे वो बेटी के रूप में हो या पत्नी के रूप में या फिर मां के रूप में, उसका महत्व मर्द से ज़रा भी कम नहीं है औरत के पैदा होने का उद्देश्य मर्द की सेवा न हो कर मर्द की सुकूने ज़िन्दगी है उसे मर्द का जोड़ा बना कर दुनिया में भेजा गया है जैसा कि कुर्आन में है कि उसकी निशानियों में से एक है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम्ही से पैदा किया है ताकि तुम्हे उससे सुकून हासिल हो और फिर तुम्हारे बीच मुहब्बत व रहमत पैदा की।

(सूरह रोम 30:21)

इसके साथ ही मर्द व औरत को विवाह का अधिकार दिया और साथ ही यह छूट भी दी कि मर्द व औरत एक दूसरे को देख कर पसन्द कर लें। इस्लाम में औरतों के साथ कोई ज़बरदस्ती नही है बल्कि उन्हें ये अधिकार दिया गया है कि वो किसी के विवाह के प्रस्ताव को अपनी इच्छा से स्वीकार या अस्वीकार कर सकती है। "उसकी मर्ज़ी के खिलाफ या उसकी रज़ामन्दी के बिना कोई व्यक्ति उसका विवाह नही कर सकता"।

(अबुल आला मौदूदी, पर्दा, पेज नं0 173)

इसके अलावा इस्लाम में मर्दों को औरतों का संरक्षक बताया गया है और उनकी सुरक्षा की पूरी ज़िम्मेदारी मर्द को दी है। औरतों को मर्द की अनुमति से व्यापार करने का भी अधिकार है स्वयं आप सल्ल0 की पहली पत्नी हज़रत खदीजा रज़ि0

एक बहुत बड़ी व्यापारी थीं इनके विषय में कहा जाता है कि जब अहले मक्का का काफिला व्यापार को जाता था तो अकेला इनका सामान पूरे कुरैश के बराबर होता था। (मौलाना शिबली नोमानी, सीरतुन्नबी पेज नं0188,1/2)

इसके लिए हदीस में है कि अल्लाह ने तुमको अनुमति दी है कि तुम अपनी ज़रूरत के लिए घर से बाहर निकल सकती हो लेकिन यह अनुमति केवल हालात एवं ज़रूरत पड़ने पर ही है और यहां तक कि इस्लाम में औरत को विधवा के रूप में दोबारा विवाह करने का भी अधिकार दिया है। स्वयं आप सल्ल0 ने पहला विवाह हज़रत खदीजा रज़ि0 से किया जो कि एक विधवा ही थीं।

माँ के रूप में-

इस्लामी शिक्षा की एक विशेषता यह भी है कि वो किसी व्यक्ति को तब तक कोई अधिकार नहीं देती जब तक साथ में कोई ज़िम्मेदारी न दे और तब तक कोई ज़िम्मेदारी नहीं देती जब तक साथ में कोई अधिकार न दे। उसने माँ–बाप पर बच्चों के पालन–पोषण एवं शिक्षा की ज़िम्मेदारी तो दी लेकिन साथ ही साथ बच्चों को यह आदेश दिया कि माँ–बाप की खिदमत करो, इस प्रकार माँ–बाप को एक अधिकार दे दिया। लेकिन कुर्आन में माँ की अधिक खिदमत करने का आदेश दे दिया क्योंकि वो बाप से ज़्यादा मुसीबतें झेलती है और बच्चों के पालन–पोषण की अधिक ज़िम्मेदारी उसी पर होती है। स्वयं आप सल्ल0 ने बेटे को बताया कि "ख़ुदा व रसूल के बाद सबसे ज़्यादा आदर व सम्मान की अधिकारी तेरी माँ है।" (मौलाना अबुल आला मौदूदी, पर्दा, पेज नं0 179)

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि इस्लाम ने महिलाओं को अपने जीवन के हर भाग में महत्व किया है इस्लाम ने औरत को बेटी के रूप में, पत्नी के रूप में, माँ के रूप में और यहाँ तक विधवा के रूप में भी सम्मान दिया है।

आज अगर नारी मुक्ति और नारी सवतंत्रता का नारा दिया जाता है तो इसके पीछे उन लोगों की मानसिकता ज़रूर काम कर रही है जो नारी को घरों से बाहर निकाल कर उन्हें अधिकार देने की जगह अपने उपयोग की वस्तु बनाना चाहते हैं। पश्चिमी देशों में और विशेष रूप से अमेरिका में जो महिलाओं पर अत्याचार होते हैं वो किसी से छिपे नहीं हैं। भारत में भी जब से नारी मुक्ति और नारी स्वतंत्रता का नारा दिया गया है तब से महिलाओं के प्रति अपराध बहुत बढ़ गए हैं।

इस्लाम ने नारी सुरक्षा पर विशेष महत्व दिया गया है। अगर कहीं पर स्वतंत्रता को सीमित करने की बात किसी को महसूस होती है तो वो केवल महिला की सुरक्षा को ध्यान में रख कर ही है, अन्यथा नहीं। महिला को पूरे सम्मान के साथ जीने का अधिकार जैसा इस्लाम में है वैसा कहीं और नहीं है।

भारत प्यारा ज़िन्दाबाद

–इदारा

दिन है यह आज़ादी का
भारत की आबादी का
आओ गाएं मिल के तराना
जनता की आज़ादी का
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
सारे हिन्दी वतनी भाई
अहद करें सब भाई मिल कर
आपस में न होगी लड़ाई
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद

यां है मज़ाहिब की आज़ादी
यां है सक़ाफ़त की आज़ादी
लालच दे मज़हब न बदलो
इससे आएगी बरबादी
भारत प्यारा ज़िदा बाद
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद

अगर क़ियादत तुम्हें मिली है
बड़ी अमानत तुम्हें मिली है
अपनों ही को आगे बढ़ाना
यह तो ख़ियानत साफ़ खुली है
ना हो ख़ियानत, हो इन्साफ़
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद

पूरा थाना लाइन हाज़िर-

काफी दिनों पहले की बात है एक स्टेशन से एक किलो मीटर दूरी पर थाना था, स्टेशन से जो भी थाने का पुलिस तांगे पर बैठ कर थाने जाता तो ताँगे वाले को किराया न देता, यह बात एक मंत्री को मालूम हुई, मंत्री भेस बदल कर एक पुलिस वाले के साथ ताँगे पर बैठ कर चले, थाने के सामने जब

अपने रब को सब पहचानें
ख़ल्क़ को, उसका कुंबा जानें
कहीं भी कोई मुशकिल आए
हमदर्दी को लाज़िम जानें
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद

इल्म देश में आ़म करो तुम
अच्छे अच्छे काम करो तुम
नेक बनो नेकी फैलाओ
नफ़्स को अपने राम करो तुम
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद

रिशवत को तुम दूर भगाओ
काम की चोरी दूर भगाओ
आलस, सुस्ती दूर भगाओ
मेहनत करना सबको सिखाओ
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद

अनपढ़ यां पर रहे न कोई
ज़ुल्म किसी पर करे न कोई
माँ बहनों की इज़्ज़त में भी
कमी यहां पर करे न कोई
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद

पूरा थाना....................

पुलिस वाला ताँगे से उतर कर किराया दिये बिना जाने लगा तो भेस बदले मंत्री ने पुलिस वाले से कहा अगर तुम इस का किराया नहीं देते तो मैं भी न दूंगा, पुलिस मैन को गुस्सा आ गया और मंत्री जी को उतार कर थाने ले गया और कोठरी में बंद कर दिया एक घंटे के बाद भेस बदले मंत्री ने कहा मुझे अपने भाई को फोन कर लेने दो ताकि वह आ कर मुझे छुड़ाए, पुलिस मैन ने घूस के लालच में फोन करने दिया, मंत्री ने कोड में फोन पर बात की, आधे घंटे में फोर्स ने थाने को घेर लिया और थोड़ी ही देर मे पूरा थाना लाइन हाज़िर हो गया।

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: आज कल मोबाइल में भी कुर्आने मजीद के मत्न और उसकी तिलावत को महफूज करने की आसानी पैदा हो गई है, इस तरह सफर व हजर (उपस्थिति) में कहीं भी कुर्आन की तिलावत (पाठ) की जा सकती है, सवाल यह है कि अगर मोबाइल की स्क्रीन पर कुर्आन मजीद मौजूद हो तो, क्या मोबाइल को हाथ में लेने या स्क्रीन पर हाथ लगाने के लिए बावुजू होना जरूरी है? या मोबाइल के ढाँचे को गिलाफ़ तसव्वुर करते हुए बे वुजू छूने की गुंजाइश होगी?

उत्तर: मोबाइल का ढाँचा स्क्रीन से अलग चीज है इसलिए मोबाइल छूने के लिए बावुजू होना ज़रूरी नहीं है। (इस्लामिक फ़िक़्ह एकेडमी इण्डिया)

प्रश्न: गैर मुस्लिम अगर कुर्आन मजीद पढ़ने के लिए माँगे तो देना जाइज है या नहीं? क्या गैर मुस्लिम के लिए कुर्आन छूने के लिए वुजू करना ज़रूरी है?

उत्तर: अगर गैर मुस्लिम के दिल में कुर्आन मजीद की अज़्मत (सम्मान) और उसकी तरफ से इस बात का इतमीनान हो कि वह उसकी बे अदबी नहीं करेगा, तो उसको कुर्आन मजीद देना जाइज़ है। चुंकि गैर मुस्लिम, शरीअत के हुक्म का मुकल्लफ (दायी) नहीं होता, इसलिए उनके लिए वुजू करना ज़रूरी नहीं फिर भी देते वक्त उसकी हिदायत करनी चाहिए कि नापाकी की हालत में कुर्आन न छुऐ, लेकिन अगर गैर मुस्लिम को कुर्आन देने में बेहुरमती का अन्देशा हो तो फिर देना जाइज़ नहीं है, हदीस नबवी में इससे मना किया गया है। (मुस्लिम शरीफ 2:131)

प्रश्न: कुर्आन मजीद के औराक (पन्ने) अगर बोसीदा (जीर्ण) हो जायें और फट रहे हों तो क्या किया जाये?

उत्तर: कुर्आन मजीद के बोसीदा (जीर्ण) और फटे हुए औराक जिनका पढ़ना मुशकिल हो उनको पाक कपड़े में लपेट कर किसी ऐसी जगह में जहाँ लोगों के पैर न पड़ें दफ़्न कर देना चाहिए जलाना न चाहिए अगर दफ़्नाने की ऐसी जगह न हो या नदी आदि में बहाने की सुहूलत न हो तो उनको अदब से जला कर, राख को दफ़्न कर दें या पानी में बहा दें। (रद्दे मुहतार 5:373)

प्रश्न: कुर्आन मजीद ऊँची अलमारी या ताक़ पर रखा हो, और वहां चारपाई इस तरह हो कि सोने में पैर उसी तरफ फैलाना पड़ता हो तो यह कैसा है?

उत्तर: अगर कुर्आन करीम पैरों की सीध में नहीं बल्कि ऊँचाई पर है तो गुंजाइश है लेकिन अस्ल अदब यही है कि उस जानिब पैर न फैलाये, चाहे कुर्आन करीम ऊपर ही

क्यों न हो। (तहताबी :118)

प्रश्न: जिस कमरे में कुर्आन करीम हो उसकी छत पर सोना या कोई कारोबार करना कैसा है?

उत्तर: जिस कमरे में कुर्आन करीम हो उसकी छत पर सोना, चलना फिरना, या कोई काम करना गुनाह नहीं है। (फतावा हिन्दीया, 5:322)

प्रश्न: बाज अखबारात और रसाइल (पत्रिकाओं) में कुर्आने पाक की आयात छपती रहती हैं, जिनको आम तौर पर रद्दी में बेच देते हैं सवाल यह है कि उनको रद्दी में बेचना और अखबारात व रसाइल में आयात का छापना कैसा है?

उत्तर: दीन फैलाने के लिए अखबारात व रसाइल में कुर्आनी आयात और उनका तर्जुमा छापना जाइज है लेकिन उनको रद्दी में बेचना खिलाफे अदब और गुनाह है। (फतावा हिन्दीया, 5:322)

प्रश्न: बाज लोग कुर्आनी आयात कलेण्डर पर छपवा कर दुकानों और मकानों की दीवार पर सजावट की नीयत से लटकाते हैं, बसा औकात प्रायः यह गिर कर नालियों और कूड़े की नज्र हो जाते हैं, सवाल यह है कि इस तरह आयात कुर्आनी का कलेण्डरों में छपवाना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: कुर्आनी आयात का सजावट की नीयत से कलेण्डरों में छपवाना गुनाह है, फिर उन कलेण्डरों का कूड़े में चला जाना और गुनाह है अलबत्ता अगर कलेण्डरों में कुर्आनी आयात इसलिए छापी जायें कि लोगों तक कुर्आन का पैग़ाम पहुंचे तो जाइज़ है लेकिन इस सूरत में जिसको कलेण्डर दें उससे कह दें कि असकी बेअदबी न हो।

(रद्देमुहतार, 4:222)

❖❖❖

अनोखी चेकिंग

काफी समय पहले की बात है, एक मंत्री का डाक घरों से सम्बंध था उन्होंने डाक घर के एक कर्मचारी को इस प्रकार चेक किया—

उन्होंने 100 रूपयों का एम0ओ0 फार्म भरा और 100 रूपये उसकी फ़ीस के साथ फार्म में लपेट कर पत्र पेटी में डाल दिया। अन्दर हंसता मनी आर्डर लिखे हुए पते पर पहुँच गया। मंत्री जी ने डाक घर के सम्बन्धित कर्मचारी को बुलवा कर उससे इस विषय में पूछा, कर्मचारी ने उत्तर दिया कि जब मैंने एम0ओ0 फार्म रूपयों के साथ पाया तो समझा कि बेचारा भेजने वाला बुकिंग करने से अवगत न था मैंने एम0ओ0 बुक करके पैसे भेज दिये मंत्री जी कर्मचारी से बहुत ख़ुश हुए और उसको पुरस्कृत किया। क्या आज है कोई मंत्री इस तरह चेकिंग करने वाला।

हज के नये मुसाफ़िरों से

इदारा

आपने हज का इरादा किया, अल्लाह तआला आपके हज को आसान फरमाए और आपके हज को कबूल करे। अगर आप अल्लाह की तौफ़ीक़ से आ़लिम हैं या दीन का इल्म रखते हैं और हज से मुतअल्लिक़ (सम्बन्धित) बातों से वाकिफ़ (अवगत) हैं तो आप अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए कि आप अल्लाह तआला के बड़े इनआम से सरफराज़ (सम्मानित) हैं, इसके शुक्रिये में आप इरादा कीजिए कि आप के जो भाई हज को जा रहे हैं और उससे मुतअल्लिक ज़रूरी बातों से ना बलद (अनभिग्य) हैं आप उनकी मदद ज़रूर करेंगे। ऐसे ही भाइयों के लिए यहां भी कुछ पंक्तियां लिखी जा रही हैं।

इस सफर में पढ़े जाने वाले अहम कलिमात जो लब्बैक के कलिमात से जाने जाते हैं आपने याद कर लिये होंगे, आपकी मदद के लिए हम उन कलिमात को यहां लिख रहे हैं–

"लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्निअ़मत लक वल मुल्क लाशरीक लक

अनुवादः हाज़िर हूं मैं ऐ अल्लाह मैं हाजिर हूं, तेरा कोई साझी नहीं हाजिर हूं मैं, तेरा कोई साझी नही, हाजिर हूं मैं बेशक तमाम तारीफ़ें तेरे लिए हैं और तमाम नेअ़मतों का तू ही मालिक है और तमाम मुलकों पर तेरी ही बादशाही है तेरा कोई साझी नहीं है। यहां अरबी की जो दुआ़ हिन्दी में लिखी गई वह सिर्फ आप की मदद के लिए लिखी गई है उसके सही तलफ़्फ़ुज़ के लिए जानकार से मदद लेना बहुत ज़रूरी है, इसी तरह आगे भी जो अरबी दुआएं हिन्दी में लिखी जाएंगी उनको किसी जानकार से सीखना ज़रूरी होगा।

पढ़े लिखे जानकार लोग हज के दौरान जगह जगह पर अलग अलग अरबी दुआएं मांगेगे आप तो अपने रब से अपनी ज़बान में हर मौके पर खैर की दुआएं मांगें, यह बात सही हे कि कुर्आन और हदीस की दुआओं में खास बरकत है लेकिन जब आपको कुर्आन व हदीस की अरबी दुआएं नहीं याद हैं तो अपनी ज़बान ही में दुआएं मांगें अल्लाह तआला कबूल फरमाएंगे। अलबत्ता कुछ छोटी छोटी दुआएं याद करने का प्रयास करें जो यहां लिखी जा रही हैं सू–रए–बकरह की आयत नं0 201 की दुआ "रब्बना आतिना फिददुन्या हसनतंव व फ़िल आख़िरति हसनतंव व क़िना अ़ज़ाबन्नार" अनुवादः ऐ हमारे रब हम को दुन्या की भलाई अ़ता फरमा और आखिरत की भलाई अता कर और हम को जहन्नम की आग से बचा ले।

तेरहवें पारे की सू–रए –इब्राहीम की आयत नं0 40 की दुआ "रब्बिजअ़ल्नी मुक़ीमस्सलाति व मिन ज़ुर्रियती रब्बना व तक़ब्बल दुआ़ रब्बनग़फ़िरली व लि वालिदय्य व लिलमुअ्मिनीन यौम य़कूमुल हिसाब" अनुवाद– मेरे रब मुझे नमाज़ का पाबन्द बना

और मेरी औलाद को भी नमाज़ का पाबन्द बना, ऐ हमारे रब हमारी दुआएं क़बूल करले और जब क़ियामत के दिन हिसाब हो तो हमको बख्श दीजिए और हमारे माँ बाप को भी बख्श दीजिए और सारे ईमान वालों को भी बख्श दीजिए।

अट्ठारहवें पारे की सूरए– मोमिनून की आखिरी आयत "रब्बिग़फ़िर वरहम व अन्त खौरुर्राहिमीन" अनुवादः ऐ मेरे रब मेरी बख्शिश फरमा और रहम फरमा तू रहम करने वालों में सब से ज़ियादा रहम करने वाला है। यहां जो दुआएं लिखी गई इनको रोजाना और हर नमाज़ के बाद पढ़ना चाहिए लेकिन हज के सफर में इनको ज़ियादा एहतिमाम से पढ़ना चाहिए। इसी प्रकार तौबा व इस्तिगफ़ार रोज़ाना करना चाहिए मगर हज के सफर में इसकी कसरत करनी चाहिए। तौबा व इस्तिगफ़ार के मुख़्तसर कलिमात भी यहां लिखे जाते हैं "स्तगफिरुल्लाह रब्बी मिन कुल्ली ज़ंबिवं–व–अतूबू इलैहि" अनुवादः ऐ मेरे रब, अल्लाह मैं आपसे मग़फ़िरत चाहता हूँ और अपने तमाम गुनाहों से आपकी तरफ़ तौबा करता हूँ।

इसी प्रकार हज के सफ़र में दुरूद की भी कसरत करनी चाहिए, दुरूद बहुत हैं मगर आप की सुहूलत के लिए यहां एक छोटा सा दुरुद लिखा जाता है।

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव–व–अ़ला आलिहि व अस्हाबिही व वबारिक व सल्लिम" अनुवादः ऐ अल्लाह प्यारे नबी मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फरमा और उनकी आल (सन्तान) और अस्हाब (साथियों) पर भी रहमत नाज़िल फरमा और मुहम्मद पर और उनकी आल पर और उनके असहाब पर बरकत भी नाज़िल फ़रमा और सलामती भी नाजिल फरमा।

अल्लाह तआला दुआ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं तो साथ में जहां अपनी औलाद और घर खान्दान वालों के लिए दुआ करें वहीं तमाम मुसलमानों के लिए भी दुआ करें कि इस वक्त सारी दुन्या के मुसलमान आज़माइश से गुज़र रहे हैं न सिर्फ इस्लामी मुल्क में मुसलमान अम्न व चैन से हैं न गैर इस्लामी मुल्कों में मुसलमान सुकून से हैं। यहां कुछ दुआओं के अलफ़ाज़ की बातें थीं, अब चूंकि आपके हज का सफ़र करीब है इसलिए हज से मुतअल्लिक अहम बातें लिखी जाती हैं तफ़सील देखना हो तो हज से मुतअल्लिक किताबें देखें। मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी की किताब "आप हज़ कैसे करें" अच्छी किताब है। शुरुअ़ में हज के मुसाफिरों को मदीना ले जाया जाता है, बड़ा मुबारक सफर है यहीं नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की क़ब्र मुबारक है। मस्जिदे नब्वी है जिसमें एक नमाज़ का सवाब हजार नमाजों के बराबर मिलता है, आप दुरूद के विर्द के साथ मदीना तय्यिबा का सफ़र करें, वहां आपको वहाँ आठ रोज़ ठहराया जायेगा ताकि आप 40 फ़र्ज़ नमाज़ें मस्जिदे नब्वी में पढ़

सकें, आप एहतिमाम करके 40 फर्ज नमाज़ें मस्जिदे नबवी में पढ़ने की इन्तिहाई कोशिश करें रोज़ाना एक दो बार क़ब्रे अतहर पर हाजिर हो कर हज़रत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर रज़ि0 को सलाम पेश करें। तहज्जुद और इशराक़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में अदा करने की कोशिश करें, जन्नतुल बक़ीअ़ और उहुद के शहीदों की क़ब्रों की ज़ियारत करके उनको सलाम पेश करें, मस्जिदे क़ुबा में किसी वक्त जा कर नफ़्ल नमाज़ पढ़ें।

मदीना मुनव्वरा से रवानगी हो तो दुरूद सलाम पढ़ते हुए वहां से रवाना हों, ज़ुलहुलेफा में आप उम्रे का एहराम बांधेगे वहीं नहा धो कर एक चादर पहन लें, एक ओढ़ लें और सिले कपड़े उतार दें, दो रकअ़त नमाज़ पढ़ कर उम्रे के एहराम की नीयत करके तलबिया (यानी पीछे लिखे लब्बैक के कलिमात) पढ़े, औरतें अपने मामूल के कपड़ों ही में उम्रे के एहराम की नीयत करें औरतें अगर माहवारी से नापाक हों तो भी वज़ू करके उम्रे की नीयत करके तलबिया पढ़ें अब एहराम की पाबन्दियां ज़रूरी है मर्द सिले कपड़े न पहनें, न लगोंट न जांघिया, सर खुला रखें बाल काटना, उखाड़ना, नाखुन काटना, खुशबू लगाना सब के लिए मना है, कोई जानवर को मारना भी मना है, अब तलबिया खूब पढ़ें मर्द आवाज़ से औरतें आहिस्ता।

मक्का मुकर्रमा पहुंच कर सामान वगैरह रख कर बावुज़ू हरम जाएं अलबत्ता माहवारी से नापाक औरतें न जाएं, काबा शरीफ देख कर खूब दुआएं करें, फिर हजरे अस्वद के पास आ कर तवाफ़ की नीयत करके हजर का इस्तिलाम करें, यानी उसे मुंह से चूम लें, मुशकिल हो तो उसकी तरफ हाथ से इशारा कर अल्लाहु अकबर कह कर तवाफ़ शूरुअ़ करें, काबे के सात चक्कर लगाएं, हर बार हजर के सामने आएं तो हाथ से इशारा करके अल्लाहु अकबर कहें, तवाफ़ शुरुअ़ करते ही लब्बैक पढ़ना बन्द कर दें दूसरी दुआएं खूब करें, सात चक्कर हो जाने पर हरम ही में कहीं दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें, फिर ज़म ज़म पी कर सफा पहाड़ी पर जाएं वहां चौथा कल्मा पढें या अल्लाहु अकबर कहें और सई की नीयत से सफा से मरवा की तरफ जाएं रास्ते में दो हरी बत्तियों के बीच मर्द लोग ज़रा झपट कर चलें मरवा पहुंचने पर एक चक्कर हुआ, फिर सफा पर आएं तो दो चक्कर हुए फिर इसी तरह सात चक्कर पूरे करें जो मरवा पर पूरे होंगे अब आप का उमरा पूरा हो गया। अब बाल मुंड़ा लें या कटवालें, औरतें एक अंगुल बाल अपने हाथ से कैंची से काट लें, अब अपने मामूल के कपड़े पहनें और आठ ज़िलहिज्ज का इन्तिजार करें अल्लाह जितनी तौफ़ीक़ दे रोज़ाना हरम जा कर तवाफ़ करें, इस उमरे के तवाफ में एक बात बताना रह गई वह यह कि मर्द शुरुअ़ के तीन चक्कर में ज़रा अकड़ कर

चलें और ऊपर की चादर दाहने कन्धे के नीचे से निकाल कर बाएं कन्धे पर डाललें यह सातो चक्कर में मस्नून है। मगर आम तवाफ में इसकी जरूरत नहीं।

माहवारी से नापाक औरतें पाक होते ही हरम जा कर इसी तरह तवाफ और सई करके उमरा पूरा करेंगी। आठ जिलहिज्ज को फिर पहली की तरह एहराम बांधेगे मगर अब हज के एहराम की नीयत करेंगे अब फिर एहराम की पाबन्दियां लाजिमी हैं, अब आप मिना जाएंगे वहीं रात गुज़ारेंगे, नौ की सुब्ह को फ़ज्र की नमाज़ के बाद तकबीरे तशरीक़ भी पढ़े और लब्बैक भी, अच्छा यही है कि तकबीरे तशरीक़ भी हर फर्ज़ नमाज़ के बाद 13 जिलहिज्ज तक पढ़ते रहें, 9 जिलहिज्ज को आप अरफात जाएं कि यह फ़र्ज़ है वहां जुह्र व अस्र की नमाज़े एक साथ पढ़ी जाती हैं। कुछ लोग अलग अलग पढ़ते हैं आप के साथी जैसे पढ़े आप भी उसी तरह पढ़ें और खूब दुआएं करें लब्बैक भी खूब पढ़ें, गुरूब आफताब के बाद मग़रिब की नमाज़ पढ़े बिना आप मुजदलफा आएंगे वहां मगरिब व इशा एक साथ पढ़ेंगे फिर आराम करेंगे और अल्लाह से खूब दुआएं करेंगे, फज्र की नमाज़ पढ़ कर थोड़ी देर वकूफ करके 49 कंकरियां चुन कर मिना आ जाएं और जमरात जा कर जम–रए अक़्बा (बड़े शैतान) को एक एक करके सात कंकरियां मारें, माजूर लोग किसी दूसरे से भी कंकरियां मरवा सकते हैं, अब वापस आकर आप कुर्बानी करें अगर आपने कुर्बानी के लिए बैंक से टिकट लिया है तो अच्छा यह है कि बैंक के बताए हुए वक्त के बाद सर मुंडा लें और नहा धो कर आ़म कपड़े पहन लें, औरतें अपने हाथ से एक अंगुल बाल काट लें। अब आप तवाफ जियारत को आएं और जिस तरह उमरे का तवाफ और सई की थी उसी तरह तवाफ़ व सई करें। 11 जिलहिज्ज को ज़ुह्र बाद 21 कंकरियां लेकर जमरात जाएं पहले जम–रए–ऊला (छोटे शैतान) को सात कंकरियां एक एक करके मारें फिर जम–रए–वुस्ता (मंझले शैतान) को फिर जम–रए–अक्बा (बड़े शैतान) को कंकरियां मारें, रात में भी कंकरियां मारी जा सकती हैं, 12 ज़िलहिज्ज को फिर ज़ुह्र बाद तीनों शैतानों को उसी तरह कंकरियां मारेंगे और मग़रिब से पहले मिना से अपनी कियाम गाह को रवाना हो जाएंगे अब आप का हज पूरा हो गया अलहम्दुलिल्लाह अब आप घर वापसी से पहले तवाफ़े वदाअ़ करेंगे कि यह वाजिब है।

यह हज तमत्तुअ़ का बयान हुआ, हमारे यहां के लगभग सभी लोग हज तमत्तुअ़ करते हैं। हज्जे इफ़राद में मीक़ात पर सिर्फ हज की नीयत से एहराम बांधते हैं, फिर मक्का मुकर्रमा पहुंच कर तवाफ़े क़ुदूम करते हैं, उमरा नहीं करते और हज से फारिग होने तक एहराम ही में रहते हैं। हज्जे क़िरान के मीकात पर उमरा व हज दोनों की नीयत से एहराम बांधते हैं फिर मक्का मुकर्रमा पहुंच कर उमरा करते हैं मगर सर नहीं मुंडाते एहराम

ही में रहते हैं और हज पूरा करके तमत्तुअ़ की तरह 10 जिलहिज्ज को एहराम से बाहर आते हैं।

जिन लोगों के सफ़र की तारीखें आखिर में होती हैं वह सीधे मक्का मुकर्रमा जाते हैं और उमरा व हज के बाद मदीना मुनव्वरा में हाज़िरी देते हैं।

अल्लाह तआला सारे हाजियों के हज व उमरे को और मदीना हाज़िरी को क़बूल फ़रमाए आमीन।

❖❖❖

स्वतंत्रता तथा............

देशों की जनता का शोषण किया, वहां की सम्पति ढोढो कर अपने देश ले जाने लगे, इसी को साम्राज्य शासन कहा गया और यही राष्ट्र दासता थी, यह दासता भारत को भी लगभग 200 साल भुगतना पड़ी।

यह राष्ट्र दासता अथवा साम्राज्य शासन यहां के बुद्धि जीवियों के लिए असहनीय थी अतः यहां के नेताओं ने स्वतंत्रता की आवाज़ लगाई और उसके लिए प्रयास आरम्भ किये इस प्रयास में हिन्दू मुस्लिम, सिख, भारत की सारी जनता एक थी, स्वतंत्रता का प्रयास करने वाले नेताओं को बड़ी कठिनाइयों से गुज़रना पड़ा, उन्होंने पुलिस की लाठियां भी खाईं और जेल भी गये परन्तु हिम्मत न हारी लगातार लम्बे प्रयासों का परिणाम सामने आया और 15 अगस्त 1947 ई0 को भारत देश स्वतंत्र हो गया, अंग्रेज़ शासक अपने देश लौट गये, और बहुत से भारतीय जो ईसाई हो गये थे वह भारत वासियों का अंग बन गये।

अलबत्ता अंग्रेज़ों ने जाते जाते एक चाल चली और अस्ली भारत का बटवारा कर दिया और वह दो भागों में बंट गया पाकिस्तान तथा भारत, फिर एक समय वह आया जब पाकिस्तान से भी पूर्वी पाकिस्तान अलग हो कर बंगलादेश बन गया इस प्रकार हिंदोस्तान (विशाल भारत) अब तीन देशों में विभाजित है, बंगलादेश, भारत और पाकिस्तान, खुदा करे यह तीनों देश अपने आपसी मतभेदों को दूर करके मिल जुल कर अपने अपने देश में शान्ति स्थापित करें। और विकास की ओर ध्यान दें।

हर वर्ष 15 अगस्त आता है तो हम भारत वासी स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाते हैं इस में स्वतंत्रता के प्रयास करने वाले अपने बड़े नेताओं राष्ट्र पिता महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद,मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, मौलाना हिफ्ज़ुर्रहमान, सिवहारवी, मौलाना हसरत मोहानी, रफ़ी अहमद किदवाई और दूसरे बड़े नेताओं का स्मरण करते, तथा उनके अनथक प्रयासों का वर्णन करके उनको श्रधांजली अर्पित करते हैं, राष्ट्र गान गाते अपने देश की सुरक्षा करने तथा उसे विकास के मार्ग पर ले जाने का प्रण करते हैं। प्यारा भारत अमर रहे– प्यारा हिन्द ज़िन्दाबाद

❖❖❖

आख़िर नबी मुहम्मद सल्लिम अ़ला मुहम्मद

रहना जहाँ सदा है मेरा वतन वही है
यह आ़रिज़ी वतन है असली वतन वही है
कर फ़िक्र उस वतन की रहना सदा जहाँ है
अच्छा बुरा वहाँ का बनता मगर यहाँ है
दो ही मक़ाम वाँ हैं अल्लाह की है कुदरत
दोज़ख़ में नारो कुल्फ़त जन्नत में ऐशो इशरत
मअ़बूद फ़क़त अल्लाह उसके नबी मुह़म्मद
आख़िर नबी मुह़म्मद सल्लिम अ़ला मुह़म्मद
दोज़ख़ से गर है बचना कर इत्तिबाअ़ नबी का
जन्नत में गर है रहना कर इत्तिबाअ़ नबी का
असह़ाबे नबी सब थे हुब्बे नबी में कामिल
असहाब थे नबी के सब इत्तिबाअ़ में कामिल
हुब्बे नबी हूँ रखता या रब करम से तेरे
आ़शिक़ हूँ सुन्नतों का या रब करम से तेरे
औलाद मेरी या रब तेरी रहे हमेशा
हुब्बे नबी का ग़लबा उस पर रहे हमेशा
या रब नबी पे तेरे लाखों सलाम व रहमत
आले नबी पे तेरे लाखों सलाम व रहमत
अज़वाज और असहाब पर लाखों सलाम व रहमत
और ताबिईं पे सारे लाखों सलाम व रहमत

समन्द्रों की दुनिया

—जावेद इक़बाल

बेशक धरती आकाशों की बनावट में और दिन रात के आने जाने में और समन्दर में चलने वाली नौकाओं में, लोगों के लिए फ़ायदे हैं, उतारा अल्लाह ने आकाश से पानी फिर उससे धरती को जिलाया (यानी हरा भरा किया) जब कि वह मृत अवस्था में (सूखी बंजर जैसी) थी और हर तरह के जानवर फैला दिये, और हवाओं को चलाया और बादलों को भी जो उसके (अल्लाह के) आदेशानुसार धरती आकाश के बीच चलते हैं, इन सब में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धिमान हैं।

(सूरः बक़रा आयत 164)

कुरआने पाक में अल्लाह तआला ने जगह जगह पर धती की संरचना और उनके बीच पाई जाने वाली विभिन्न चीजों की चर्चा करके इंसानों को झंझोड़ा है और उन्हें चुनौती दी है कि हमारी इन सब चीज़ों में बुद्धिमान लोगों के लिए निशनियां हैं। सूरे बक़रा की उपरोक्त सन्दर्भित आयत को देखें उसमें ज़मीन व आसमानों को बनाने, दिन रात के आने जाने, समन्द्रों में नावों के चलने और उनके अन्दर से निकलने वाली अनेक फ़ायदेमंद चीज़ों में और पानी के बरसने में, बादलों और हवाओं के चलने में, सारांश यह कि दुनिया की हर चीज़ में उस मालिक की निशानियां छिपी हैं, मगर किसके लिए? अल्लाह तआला ने खुद बता दिया बुद्धिमान लोगों के लिए, ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिए। कहीं भी यह नहीं फ़रमाया कि दुनिया की इन चीज़ों में मुसलमानों के लिए निशानियां हैं, बल्कि हर जगह यही कहा कि बुद्धिमान लोगों के लिए चिन्तन करने वालों के लिए। यही कारण है कि वर्तमान काल में कुरआन के इशारों को समझ कर ग़ौर व फ़िक्र करने के नतीजे में हर चीज़ का इल्म एक अलग विषय बन गया। विभिन्न क़ौमों ने प्रत्येक विषय पर ग़ौर व फ़िक्र करना शुरु किया, खोज बीन शुरु की, परीक्षण कियें नतीजा यह हुआ कि प्रत्येक विषय की अनेक शाखायें (Branches) बनती चली गई। जिस क़ौम ने जितनी मेहनत की उसे उतनी ही सफलता मिली क्योंकि अल्लाह दुनिया में किसी की मेहनत को रायगां (बेकार) नहीं करता।

इस अवसर पर हमें फिर कुरआन में सूरः लुक़मान और कहफ़ की आयत क्रमशः 27 व 109 याद आती हैं जिसमें फरमाया गया है कि धरती के सारे वृक्ष अगर क़लम बन जायें और सारे समन्दर रोशनाई बन जायें तब भी मेरे रब की बातें ख़त्म नहीं होंगी, चाहे वैसा ही समन्दर और ले आयें।

इस समय हमारा मक़सद समन्द्रों के बारे में कुछ गौर व फिक्र करना है ताकि हम जान सकें कि समन्द्रों से हमें क्या लाभ हैं और किस तरह इंसान ने जान जोखम में डाल कर समन्द्रों के बारे में जानकारी हासिल की।

समन्द्रों के बारे में इतना तो इंसान को पहले ही मालूम हो चुका था कि नौका में बैठ कर समन्द्रों की मछलियों का शिकार किया जा सकता है जो कि सेहत और तन्दरुस्ती के लिए एक अच्छी ग़िज़ा है। प्रारम्भिक काल में सब से पहले मिस्र वासियों ने भूमध्य सागर में और फिर लाल सागर में वर्चस्व स्थापित किया धीरे धीरे उनका साहस बढ़ता गया और वे अफ़्रीका के दक्षिणी तट तक पहुंच गए। मिस्र वासियों के बाद अरब वासियों को भी समन्द्री रास्तों के बारे में महारत (दक्षता) हासिल कर ली और उन्होंने अरब सागर हिन्द महासागर और भूमध्य सागर के बारे में अच्छा खासा ज्ञान हासिल कर लिया था।

यह कुरआनी तालीमात का ही वरदान था कि अरबों ने इस्लाम के उदय के बाद समन्द्री रास्तों के बारे में, उनके अन्दर चलने वाली हवाओं की रफ़तार और रुख़ तथा वर्षा इत्यादि के बारे में बहुत तरक़्क़ी कर ली थी।

पन्द्रहवीं शताब्दी में योरोप की जागृति के बाद वहां के निवासियों में भी समन्द्रों के बारे में खोज करने की इच्छा जाग उठी। सन् 1492 ई0 में कोलम्बस ने अपना सफ़र स्पेन से शुरु किया, वह भारत की ओर आना चाहता था मगर वह अटलांटिक महासागर में उलटी दिशा में चलते हुए अमरीका महाद्वीप की ओर पहुंच गया। उसके कुछ समय बाद वास्कोडीगामा ने भी स्पेन से ही अपना सफ़र शुरु किया और वह दक्षिणी अफ़्रीका का पूरा चक्कर काट कर एक अरबवासी अहमद बिन माजिद की रहनुमाई में भारत के मालाबार तट पर पहुंचा। इसके बाद तो योरोप वासियों में एक होड़ सी लग गई और उन्होंने विभिन्न रास्तों पर चलते हुए अनेक नए–नए द्वीपों/देशों की खोज की।

सन् 1519 ई0 में स्पेन के नागरिक फ़र्डीनेंड मगैलिन ने प्रशांत महासागर में पूर्व की ओर अपना सफ़र शुरु किया और लगभग दो वर्ष में फ़िलीपींस पहुंच कर अपना नाम समन्द्री रास्तों की खोज में सर्वोच्च नागरिक के रूप में दर्ज करा लिया। वह 243 नाविकों के साथ सफ़र पर निकला था मगर मंज़िल पर पहुंचते पहुंचते केवल 18 नाविक ही ज़िन्दा बचे थे। फ़िलीपीन पहुंच कर तो मुक़ामी लोगों से हुए झड़प में खुद उसकी भी मृत्यु हो गई। मगर उसने अपने पूरे सफ़र की रूदाद स्वयं अपने क़लम से लिख कर सुरक्षित कर दी थी जिसमें बड़ी क़ीमती जानकारियां हैं।

इसके बाद योरोपीय देशों के लोगों ने समन्द्री रास्तों से चलकर विभिन्न देशों में जा बसने और नए–नए द्वीपों पर कब्ज़ा करने का जैसे बीड़ा उठा लिया।

साथ ही साथ उन लोगों ने समन्द्री मौसमों, हवाओं के चलने की गति और दिशा इत्यादि के बारे में बहुत सी जानकारी हासिल कर ली।

अमेरीका की नौसेना के एक अधिकारी मैथ्यू फ़ोंटेन मोरी ने 1826 में "The Physical Geography of the Sea" के नाम से समन्द्री विज्ञान के विषय पर सबसे पहली पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में समन्द्रों में चलने वाली हवाओं, पानी की धाराओं, उनके बीच पाये

जाने वाले द्वीपों और विभिन्न जगहों पर उनकी गहराई आदि के बारे में काफ़ी विस्तार से जानकारी इकट्ठा की गई है।

मगर अभी तक समन्द्रों को उन नामों से नहीं जाना जाता था जिन से कि आज हम उन्हें जानते हैं। 1845 ई0 में सबसे पहले समन्द्रों को तीन भागों में बांट कर इनके नाम रखे गए।

1. अटलांटिक महा सामगर।
2. पेसिफिक (प्रशांत महासागर)
3. इंडियन (हिन्द) महासागर

अटलांटिक महासागर योरोप, अफ़्रीका और उत्तरी–दक्षिणी अमेरीका के मध्य, इंडियन महासागर भारतीय उपमहाद्वीप के नीचे दक्षिण की ओर और पैसिफ़िक महासागर अमरीका उपमहाद्वीप से जापान की ओर होते हुए एशिया तक फैला हुआ है। सभी सागर आपस में मिले हुए हैं। केवल सुविधा के लिए इंसान ने इनको अलग अलग नाम देकर कुछ सीमायें निर्धारित कर दी हैं। पैसिफ़िक महासागर सब से बड़ा है और सबसे अधिक गहराई वाला स्थान भी इसी में है जैसा कि निम्न चार्ट से स्पष्ट है–

महासागर का नाम	क्षेत्रफल (वर्ग कि0मी0 में)	अधिकतम गहराई (फुट में)
पैसिफिक	15,55,57,000 (15 करोड़ 55 लाख 57 हज़ार)	35,827
अटलांटिक	7,67,62,000 (7 करोड़ 67 लाख 62 हज़ार)	30,246
हिन्द महासागर	6,85,56,000 (6 करोड़ 85 लाख 56 हज़ार)	24,460

महासागरों की यह गहराई भिन्न भिन्न जगहों पर भिन्न पाई गई है इसीलिए इन गहराइयों को निश्चित नहीं माना जा सकता।

काफ़ी समय बाद इंसान का ध्यान ज़मीन के उत्तरी ध्रुव की ओर गया। उत्तरी ध्रुव पर हमेशा बर्फ जमी रहने के कारण यह भी पता नहीं था कि वहां ज़मीन है या समन्दर। किन्तु कई देशों के सामुहिक प्रयासों से अन्ततः यह पता चला कि बर्फ़ से ढके इस समन्दर में भी बहुत से द्वीप समूह हैं जहां एस्कीमो जाति के लोग बहुत पहले से बस चुके हैं, वे वहां कब आए और बर्फ़ के बीच रहना उन्होंने कैसे सीखा यह एक पहेली ही है। इस समन्दर को आर्कटिक महासागर के नाम से जाना जाता है इस का क्षेत्रफल एक करोड़ चालीस लाख छप्पन हजार (1,40,56,000) वर्ग कि0मी0 और अधिकतम गहराई 18,456 फुट है।

दक्षिणी ध्रुव की ओर तो इंसान का ध्यान और भी बाद में गया। यहां भी दूर दूर तक बर्फ़ जमी होने के कारण इंसान की पहुंच असम्भव ही थी परन्तु आधुनिक संयंत्रों से लेस जहाज़ों की मदद से फ्रांस और अमरीका आदि देशों के नागरिकों ने दक्षिणी ध्रुव पर ज़मीन और समन्दर दोनों ही की मौजूदगी का पता लगा लिया।

इस समन्दर को साउथर्न महासागर का नाम वर्ष 2000 में दिया गया और इसकी सीमाएं निर्धारित की गई। क्योंकि यह महासागर पहले तीन महासागरों से मिलता है इसलिए तय यह पाया कि जिस जिस स्थान पर पानी का तापमान 60 डिग्री सेन्टीग्रेड से कम होगा वहां वहां पर से साउर्थन महासागर की सीमा रेखा गुज़रेगी इस तरह इसका क्षेत्रफल दो करोड़ तीन लाख सत्ताईस हज़ार वर्ग कि0मी0 (2,03,27000) तथा अधिकतम गहराई तेइस हज़ार सात सौ सैंतिस (23,737) फुट नापी गई है।

दक्षिणी महासागर के क्षेत्र में अनेक देश अनुसंधान कार्य कर रहे हैं जिन में हमारा देश भारत भी जनवरी 1982 से शामिल हो चुका है। भारतीय दल की टीम में 21 वैज्ञानिक थे जिन के डायरेक्टर डॉ0 एस0ज़ैड क़ासिम थे। उन्होंने इस महासागर के जिस तट पर अपना पड़ाव डाला था उसका नाम दक्षिणी गंगोत्री रखा।

ज़मीन के नाम से जाना जाने वाला हमारे इस (Planet) का कुल क्षेत्रफल इक्कावन करोड़ छयासठ हज़ार (51,00,66,000) वर्ग कि0मी0 है, जिसमें धरती का क्षेत्रफल (Land Area) चौदह करोड़ छियासी लाख सैतांलिस हज़ार (14,86,47,000) वर्ग कि0मी0 है जो कि लगभग 29 प्रतिशत हैं इस तरह ज़मीन नामी प्लैनेट पर इकहत्तर प्रतिशत पानी है जिसमें 97 हिस्सा पानी खारा है और केवल 3 हिस्सा पानी ही पीने योग्य है।

इन सब जानकारियों को हासिल करने में सब से ज़्यादा परिश्रम और योगदान योरोप वासियों का है यही वजह है कि दुनिया के अधिकांश भाग पर योरोप वासियों का अधिकार स्थापित हो गया। उन्होंने ख़ुशकी और तरी के भीतर की विस्तृत जानकारी हासिल करने में अपनी जानें जोखिम में डालीं, अपने खज़ानों को लुटा दिया। उन्होंने कुरआन की चुनौती को स्वीकार किया और उसके इशारों को समझा''बड़ी बड़ी निशानियां हैं ''अक़ल व फ़हम वालों के लिए''। (अलनहल 12)

यह बात अलग है कि उन्होंने अपने अहम और ज़िद के चलते क़ुरआन के बुनियादी और हक़ीक़ी पैग़ाम को स्वीकार नहीं किया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का रसूल नहीं माना, जिसके कारण आख़िरत में उनका कोई हिस्सा नहीं। दुनिया तो दारुल असबाब है जो यहां जैसी मेहनत करेगा उसको वैसा ही फल दुनिया में दिया जायेगा।

दूसरी तरफ हम मुसलमान कहलाने वाले लोग हैं, ईमान व यक़ीन के साथ किसी न किसी दर्जे में इस्लामी तालीमात पर आज भी अमल पैरा हैं, मगर शुरु ज़माने में लगभग एक हज़ार साल तक अपने पूर्वजों के कारनामों पर फ़ख्र (गर्व) करने के सिवा ग़ौर व फ़िक्र के मैदान में खुद कुछ कर गुज़रने का हौसला जो इल्म की रोशनी से महरूम थीं, हमारे बुज़ुर्गों की वैज्ञानिक दृष्टि के प्रभाव से ऐसी जागीं कि आज ज़मीन व आसमानों पर कमन्दें डाल रही हैं। □□

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखिये

—इदारा

उर्दू शब्द तथा वाक्य हिन्दी की मदद से पढ़िये।

हिन्दी	उर्दू	हिन्दी	उर्दू	हिन्दी	उर्दू
पीला	پیلا	सूखा	سوکھا	साझा	ساجھا
पाना	پانا	गीला	گیلا	कूदा	کودا
जाला	جالا	जाना	جانا	मीठा	میٹھا
सोना	سونا	डाला	ڈالا	खाना	کھانا
हीरा	ہیرا	लोटा	لوٹا	गाला	گالا
ढाया	ڈھایا	नीचा	نیچا	घोड़ा	گھوڑا
भूका	بھوکا	गाया	گایا	सीधा	سیدھا
चौका	چوکا	भूला	بھولا	लाया	لایا
लेटा	لیٹا	दौड़ा	دوڑا	झूटा	جھوٹا
बाजा	باجا	लेना	لینا	सौदा	سودا
रूखा	روکھا	राजा	راجا	सौदा लाया	سودا لایا
बाजा बजा	باجا بجا	चौका दिया	چوکا دیا	राजा भूला	راجا بھولا
सोना तौला	سونا تولا	खाना खाया	کھانا کھایا	थैला खोला	تھیلا کھولا
साझा किया	ساجھا کیا	सीधा चला	سیدھا چلا	लोटा लाया	لوٹا لایا
भूखा सोया	بھوکا سویا		घोड़ा दौड़ाया	گھوڑا دوڑایا	